शाने औलिया

क़ुरआन और जदीद साइंस का तक़ाबुली जायज़ा

(मिक़्नातीसियत और रूहानियत के तनाज़ुर में)

शैख़ुल इस्लाम

डॉ.मुहम्मद ताहिरुल क़ादरी



मिन्हाजुल क़ुरआन इण्टरनेशनल इण्डिया

शाने औलिया

शैख़ुल इस्लाम डॉ. मुहम्मद ताहिरुल क़ादरी

ज़ेरे इहतिमाम : **सय्यद नादे अ़ली हसन अ़ली चिश्ती**
वडोदरा (गुजरात)

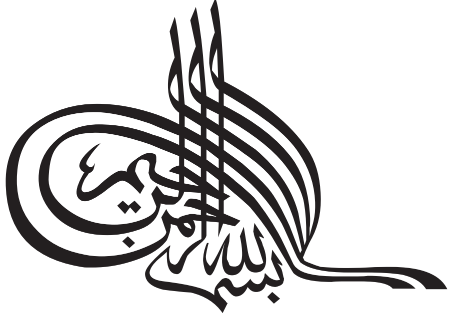
हिन्दी लिपियांतर : **मुहम्मद सिराज रज़्वी**
जोधपुर (राजस्थान)

ब-ख़त्ते हिन्दी इशाअ़ते अव्वल : सितम्बर 2015 (तादाद 1100)

नोट : शैख़ुल इस्लाम डॉक्टर मुहम्मद ताहिरुल क़ादरी की तसानीफ़ और ख़ुत्बात व लैक्चर्स की कैसेट्स और सीडीज़ से हासिल होने वाली जुम्ला आमदनी उन की तरफ़ से हमेशा के लिये तहरीके मिन्हाजुल क़ुरआन के लिये वक़्फ़ है। (डायरेक्टर मिन्हाजुल क़ुरआन पब्लिकेशंज़)



Minhaj-ul-Quran International India
(Production Department : Vadodara - Gujarat)
Umaj Road At & Post Karjan
Dist. Vadodara - 391240 Gujarat (INDIA)
(M) 098989 63623 / 097256 21001 (Office : 02666 232533)
TOLL FREE NO. : 1800 – 200 – 7088
e-mail :- ho.minhaj@gmail.com
Websites :- www.minhajproductions.in, www.minhaj.in



مَولَايَ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا أَبَدًا

عَلَى حَبِيبِكَ خَيرِ الْخَلْقِ كُلِّهِمِ

نَبِيُّنَا الْآمِرُ النَّاهِي فَلَا أَحَدٌ

أَبَرَّ فِي قَوْلِ لَا مِنْهُ وَلَا نَعَمِ

﴿صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى آلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ﴾

फहरिस्त

अर्ज़े मुरत्तिब

बक़ौले मुफक्किरे इस्लाम अ़ल्लामा इक़बाल क़ुरआने हकीम अल्लाह तआ़ला की वो किताब है जो मुजर्रद तसव्वुर की बजाय ठोस अ़मल पर ज़ोर देती है। इस अ़मल के सूते बिला शुबह रज़ा व मशियते इलाही के सर चश्मे से फूटते हैं। क़ुरआन से अख़्ज़ कर्दा इल्म.....इल्म बिल वही है, जो इस आ़लमे दुनिया में आ़लमे आख़िरत तक रसाई हासिल करने और उख़रवी ज़िन्दगी में फौज़ो फलाह (कामयाबी) की ज़मानत हासिल करने के लिये एक ज़ीने का काम देता है। क़ुरआन शुरू से आख़िर तक बुरहान और फुरक़ान और हक़ व बातिल के दरमियान हद्दे फासिल है, जो उम्मते मुस्लिमा के हर फर्द के लिये मुकम्मल ज़ाब्ताए हयात का दर्जा रखता है। इस में वज़ाहत व सराहत के साथ कामयाब ज़िन्दगी गुज़ारने के लिये हर शोअ़बे और हर पहलू के हुदूद मुतअ़य्यन किये गये हैं। क़ुरआने हकीम के वज़अ़ कर्दा ज़ाब्ते बड़े वाज़ेह और हर क़िस्म के इब्हाम और शक व रैब से पाक है। पैग़म्बरे इस्लाम ﷺ की ज़ाते सतूदा सिफात शारेअ़ (Law Giver) और शारेह (Interpreter) दोनों हैसियतों की हामिल है। इस्लाम वो निज़ामे हयात फराहम करता है, जिसमें अक़ाइद व नज़रियात और आअ़माल की असास को परख़ने के लिये हुज़ूर नबीए करीम ﷺ की ज़ाते गिरामी कसौटी (Touchstone) का दर्जा रखती है और वही सिराते मुस्तक़ीम है जो आप ﷺ के उस्वए हसना की वसातत से कामयाब

उख़रवी ज़िन्दगी से हम किनार करता है। बक़ौल हज़रत सअ़दी शीराज़ी عليه الرحمة :

ख़िलाफ़े पैग़म्बर कसे रह गुज़ीद ।
हरगिज़ नख़्वाहद बमंज़िल रसीद।।

क़ुरआन का नज़रियाए कायनात किसी जामिद और ग़ैर मुतहर्रिक कायनात का तसव्वुर पेश नहीं करता, बल्कि एक ऐसी कायनात का नक़्शा हमारे सामने रखता है, जो दाइमी तग़य्युरात और मुसलसल तब्दीलियों की आमाजगाह है। बक़ौल इक़बाल عليه الرحمة :

ये कायनात अभी नातमाम है शायद ।
कि आ रही है दमा दम सदाए कुन फयकून।।

अ़ल्लामा इक़बाल की नज़र में वो दिन दूर नहीं जब मज़हब और साइंस के दरमियान मुग़ायरत (Alienation) और दूई (Duality) अपने मन्तिक़ी अन्जाम को पहुँचेगी और दोनों बतदरीज एक ऐसे नुक़्ते को छू लेंगे जो बाहमी हम आहन्गी और तवाफ़ुक़ (Mutual Harmony) का आईनादार होगा।

मुफक्किरे इस्लाम प्रोफेसर डॉक्टर मुहम्मद ताहिरुल कादरी का ज़ेरे नज़र ख़िताब एक ऐसी हक़ीक़त की निशानदही करता है जो जदीद साइंसी उलूम के हवाले से हमारे अस्लाफ के शानदार और क़ाबिले तक़लीद इल्मी व फिक्री कारनामों की रौशनी से मुज़य्यन है और इसमें औलिया अल्लाह की शान और मक़ाम व मर्तबा से बहस की गई है। ये एक नाक़ाबिले तरदीद हक़ीक़त है कि जब से इल्म व हुनर और हिकमत व फलसफा की अज़ीम मीरास अहले इस्लाम से छिनकर अग़यार के क़ब्ज़े व तसर्रुफ में चली गई है। एक हमागीर ज़वाल व इन्हितात और इदबार के तारीक साये उम्मते मुस्लिमा के सर पर गहरे और दबीज़ होते चले जा रहे हैं। क़ाइदे तहरीक मिन्हाजुल क़ुरआन ने अपने

ख़िताब में इस तल्ख़ हक़ीक़त का ज़िक्र इन्तेहाई दिलसोज़ी से किया है और बड़े ही दर्दमन्दाना पैराये में इस अम्र पर ज़ोर दिया है कि काश अ़स्रे हाज़िर में मर्दे मोमिन दोबारा अपने उस गुमशुदा मीरास को पा ले।

ग़नी रोज़े सियाह पीरे कन्आं रा तमाशा कुन।
कि नूरे दीदह अश रोशन कुनद चश्मे ज़ुलैख़ा रा ।।

ज़रूरत इस अम्र की है कि क़ाइदे इन्क़िलाब के इस पैग़ाम को हमा तन गोश होकर सुना जाए और मिन हैसुल मजमूअ़ जदीद साइंसी उलूम के हुसूल को अपना क़ौमी नसबुल ऐन बना लिया जाए।

ज़िया नय्यर
ख़ादिम तहरीके मिन्हाजुल क़ुरआन



ये एक अम्रे वाक़िआ़ है कि अपनी सतवत (दबदबा या रौब) व शौकत के कमो बेश बारह सौ साला उरूज के बाद जब से उम्मते मुस्लिमा ज़वाल व इन्हितात का शिकार हुई है, ज़िन्दा क़ौमों की तरह दीनी व दुनियावी तरक़्क़ी व फलाह की तरफ आ़ज़िमे सफर रहना भूल चुकी है। हम ने ख़ुद को सतही और ला यअ़नी इख़्तिलाफात में उलझाकर अक़्वामें आ़लम को इस बात का खुला मौक़ा फराहम किया है कि वो हमारे अस्लाफ की इल्मी व फिक्री और साइंसी तहक़ीक़ात के समरात से मुस्तफीद हो सकें और ख़ुद मन्ज़रे हस्ती से दूर किनारे हटकर ज़िन्दगी की दौड़ में पीछे रह गये हैं और सही मअ़नों में अपनी इस शिकस्त का इदराक भी नहीं रखते। नतीजतन ज़िल्लत व रुस्वाई, ज़वाल व मस्कनत और इदबार व इन्हितात के दबीज़ साये हमारा मुक़द्दर बन कर रह गये हैं।

आ़लमे इस्लाम की मौजूदा ज़बूं हाली और उम्मते मुस्लिमा की नाकामी का एक बड़ा सबब साइंसी उलूम की तरफ हमारी अ़दमे तवज्जोही (तवज्जोह न होना) और इग़माज़ की रविश है, जिस के नतीजे में उम्मते मुस्लिमा अक़्वामे आ़लम के मुक़ाबले में किसी भी मैदाने मुसाबक़त में बहुत पीछे रह गई है। अगर हम दिक़्क़ते नज़र से तारीख़े इन्सानी का बेलाग़ मुतालआ़ करें तो ये हक़ीक़त रोज़े रोशन की तरह अ़यां हो जाती है कि हमारे अस्लाफ ने एक हज़ार साल के लम्बे अर्से तक पूरी दुनिया को फिक्र व फलसफा और इल्म व हुनर के बेमिसाल कारनामों के साथ बेशुमार साइंसी उलूम की बुनियादों से भी फैज़याब किया। जदीद साइंस जिसे बजा तौर पर अ़स्री इल्म क़रार दिया जा सकता है, उसे तरक़्क़ी के मौजूदा बामे उरूज (ऊंचाई) तक पहुंचाने में हमारे रोशन ज़मीर आबा व अजदाद की इल्मी ख़िदमात का बहुत बड़ा अ़मल

दख़ल था। उन्होंने इल्मो हुनर की जो शम्अ रोशन की उस से जहालत के अन्धेरों में डूबी हुई अक़्वामे मग़रिब ने इक्तिसाबे (हासिल) नूर किया।

अस्लाफ की हिकमत और हमारी बेतदबीरी

हमारे अस्लाफ ने अपने दौर के अ़स्री उलूम के ज़रिये उन हमलों के ख़िलाफ जो आ़लमे कुफ्र की तरफ से इस्लामी अक़ाइद व नज़रियात पर किये जाते रहे, मोअस्सिर दिफाअ़ (दूर) किया। ऐसा करते हुए उन्होंने वही हथियार इस्तेमाल किया जो दुश्मन का हथियार था। ज़हनी क़ज़ियों पर मुश्तमिल यूनानी फलसफे का जवाब अ़क़्ली व मन्तिक़ी अन्दाज़ से दिया और उन हमलों को अपनी अ़क़्ली व फिक्री तौजीहात और इल्मी तसरीहात से नाकारा बनाकर रख दिया और इस्लाम की सदाक़त व हक़्क़ानियत पर कोई आंच न आने दी। मगर अफसोस सद अफसोस तक़रीबन पिछली दो सदियों से वो पांसा पलट चुका है और अ़स्री उलूम की वो बिसात जो अपने दौरे उरूज (बुलन्दी के दौर) में मुसलमान अहले इल्म व दानिश ने बिछाई थी, उस पर ग़ैर मुस्लिम क़ौमें क़ाबिज़ हैं। आज का मुसलमान हर मैदान में राहे पस्पाई इख़्तियार करने के बाद उन का दस्ते नगर और ताबेअ़ मुहमल बन कर रह गया है। पिछली एक सदी से बिलउमूम और गुज़िश्ता निस्फ सदी से बिल ख़ुसूस मग़रिब की तरफ से साइंसी अन्दाज़े फिक्र में इस्लामी अक़ाइद व तालीमात पर जो ताबड़ तोड़ जारिहाना हमले होते चले आ रहे हैं, हमारे अस्लाफ को उनका सामना न था।

बातिल और आ़लमे कुफ्र के ये हमले पहलूदार और कई जहतों के हामिल हैं और मुआ़मला उस वक़्त और भी पेचीदा हो जाता है जब हमारे नाम निहाद मज़हबी स्कॉलर मग़रिबी फिक्र के ख़ौशाचीं हो जाते हैं और अहले मग़रिब जो सिरे से रूहानियत के क़ाइल ही नहीं, उन की इलहाद परवर और

माद्दा परस्ताना सोच और ज़हनियत का प्रचार करने लगते हैं। हमारे ये सतह बीन दानिशवर मग़रिबी अहले इल्म की हमनवाई में उनके नज़रियात व ख़यालात की जुगाली करते हैं और उस रूहानियत की नफी को जो नबीए करीम ﷺ के तवस्सुल की बुनियाद है, अपना शिआ़र बना लेते हैं। इस सूरते हाल का गहराई में जाकर नाक़िदाना तजज़िया (Critical Analysis) करें तो उस का ये बुनियादी सबब सामने आता है कि इस वक़्त इल्म व दानिश का मर्कज़ आ़लमे इस्लाम की बजाय मग़रिब और यूरोप की दर्सगाहें बनी हुई हैं और उनके वज़अ़ कर्दा सांचों में ढलने वाला इल्मी सरमाया मग़रिबी मुल्हिदाना फिक्र व फलसफा की गहरी छाप रखता है। ज़मानए हाल के मुस्लिम औलमा व मुहक़्क़िक़ीन की बड़ी अक्सरियत मग़रिबी फिक्र से मुतअस्सिर और मरऊ़ब हुए बग़ैर नहीं रहती। नतीजतन इस्लाम पर साइंसी बुनियादों पर किये जाने वाले ताज़ा मग़रिबी हमलों का उनके पास कोई मोअस्सिर और ख़ातिर ख़्वाह जवाब नहीं होता और वो उन हमलों के जवाब में अक्सर माज़रत ख़्वाहाना रवैया अपनाते हैं या फिर दक़ियानूसी यूनानी फिक्र व फलसफा के बलबूते पर जवाब देने की नाकाम कोशिश करते हैं। हमारी फिक्री कम मायगी और इफलास का अन्दाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि इल्मी सतह पर यूनान को ख़त्म किये हुए सदियां गुज़र गईं मगर हमारे दीनी मदरसों में यूनानी फलसफा अभी तक शामिले निसाब है। अ़मली व फिक्री तरक़्क़ी में हाइल इस जमूद के नतीजे में हमारी तख़लीक़ी क़ुव्वत व तवानाई (Creative Energy) के सूते ख़ुश्क हो चुके हैं। ऐसे में बातिल की फिक्री व इल्मी यलग़ार का मुक़ाबला क्योंकर मुमकिन है!

बक़ौले इक़बाल عليه الرحمة :

गला तो घोंट दिया अहले मदरसा ने तेरा।
कहाँ से आए सदा ला इलाहा इल्लल्लाह।।

मज़बूत मुक़द्दमा............कमज़ोर वकील

अफसोस का मक़ाम है कि अस्रे हाज़िर में आ़लमे इस्लाम मज़बूत दलाइल होने के बावजूद अच्छे वकील न होने की बिना पर अपना मुक़द्दमा हारता नज़र आ रहा है जबकि आ़लमे ताग़ूत और इस्लाम दुश्मन क़ुव्वतें अपना कमज़ोर मुक़द्दमा मज़बूत और ताक़तवर वकीलों की मेहनत की वजह से जीतती दिखाई देती हैं। इस सूरते हाल का मदावा (हल) सिर्फ इसी सूरत मुमकिन है कि इस्लामी उलूम की इशाअ़त के साथ साथ अस्री उलूम की तरवीज और फरोग़ पर भी हर मुमकिन हद तक ज़्यादा से ज़्यादा तवज्जोह दी जाए। अ़स्री उलूम के सीखने और सिखाने पर तवज्जोह इसलिए भी ज़रूरी है कि ये क़दीम (पुरानी) यूनानी फलसफे की निस्बत क़ुरआन व सुन्नत से ज़्यादा क़रीब तर हैं और मौजूदा दौर के अक्सर साइंसी हक़ाइक़ व इन्किशाफात क़ुरआन व हदीस के माख़ज़ व मसादिर से हासिल कर्दा मालूमात की तसदीक़ व तौसीक़ (Verfication & Validation) कर चुके हैं। ये बात तय शुदा है कि ज्यों ज्यों जदीद साइंस की तहक़ीक़ात का दामन फैलता चला जाएगा, इस्लामी तालीमात की हुज्जियत और क़तइय्यत सारे आ़लम पर आशकार होती चली जाएगी और इस ज़िम्न में मज़ीद तरक़्क़ी और इरतिक़ा के इमकानात खुलते चले जाएंगे।

आ़लमे इस्लाम के मौजूदा हालात किन असबाब व अ़वामिल का नतीजा हैं? क्या सबब है कि हम अपने नुक़्तए नज़र, इस्तिदलाल और नज़रिये के दुरुस्त होने के बावजूद ज़माने की अ़दालत में अपने मुक़द्दमे की वकालत ठीक तौर से नहीं कर पा रहे और जदीद दुनिया हमारे मब्नी बर हक़ मौक़िफ और इस्तिदलाल को तस्लीम करने से इन्कारी है? इस सूरते हाल का बेलाग तजज़िया किया जाए तो ये हक़ीक़त रोज़े रोशन की तरह अ़यां नज़र आती है कि हम मिन हैसुल मजमूअ़ दौरे हाज़िर के तक़ाज़ों से कमा हक़्क़ाहू आगाह

नहीं हैं। उम्मते मुस्लिमा की अक्सरियत उस ज़बान से बाख़बर नहीं जिस के ज़रिये आ़लमी राय आम्मा की अ़दालत में अग़यार को अपने मौक़िफ़ पर क़ाइल किया जा सकता है। हम उस अस्लहा (हथियार) व तकनीक से एकदम महरूम हैं जिस से लैस होकर इस्लाम दुश्मन कुव्वतें हम पर ताबड़ तोड़ हमले कर रही हैं। दुश्मन इन्टरनेट पर क़ुरआन मजीद में तहरीफ करता है तो हम उसका जवाब उसी सतह पर देने की बजाय फक़त अपने रसाइल व जराइद (किताबें) में इस अ़मले क़बीह (खराब काम) पर मलामत करके अपने फर्ज़ से सुबुकदोश हो जाना चाहते हैं। हमारा हाल ये है कि दुश्मन हम पर तोपों और टैंकों से मुसल्लह होकर हमला कर रहा है और हम उस के मुक़ाबले में तीर कमान लिये खड़े हैं। वो हमारी सफों को मुन्तशिर करने के लिये बमबारी करता है और हम पत्थर लिये उस के मुक़ाबले में निकल आते हैं।

कुफ्र व इल्हाद की साज़िशों का तोड़

दौरे जदीद में साइंस तेज़ रफ्तार तरक़्क़ी से आगे बढ़ रही है। मग़रिबी दुनिया को बजा तौर पर साइंस और टेक्नॉलोजी की मुहय्यरुल उकूल तरक़्क़ी पर नाज़ है और वो उस इल्मी बरतरी और साइंसी तरक़्क़ी के बलबूते पर दीगर बहुत सी मुफलिस व कमज़ोर क़ौमों की तरह आ़लमे इस्लाम को भी अपने मातहत रखना चाहती है। जदीद तहज़ीब, जो फिल हक़ीक़त में साइंसी तहज़ीब का दूसरा नाम है, ज्योग्राफियाई फासलों का ख़ात्मा करती चली जा रही है। लाखों मील की मसाफत में बिखरी इन्सानी आबादी ग्लोबल विलेज (Global Village) बनकर रह गई है। साइंसी तहक़ीक़ात की बदौलत सहरा व बयाबां लहलहाते खलियानों और गुलिस्तानों में तब्दील हो रहे हैं औरे ज़मीन के नीचे मदफून ख़ज़ाने इन्सान के क़दमों में ढेर हो रहे हैं। साइंस ने दौरे हाज़िर

के इन्सान के हाथों में वो कुव्वत दे दी है जिस के बलबूते पर वो पूरी दुनिया के वसाइल को अपने तसर्रुफ (पकड़) में ला सकता है। लेकिन क़ाबिले अफसोस बात ये है कि मग़रिबी अक़वाम साइंस और टेक्नॉलोजी पर क़ाबिज़ होने की वजह से पूरी दुनिया की पिछड़ी हुई क़ौमों को हमेशा हमेशा के लिये अपना मोहताज और दस्ते नगर (भिखारी) रखना चाहती हैं। इस सिलसिले में उनका ख़ुसूसी हदफ (निशाना) दुनिया भर के मुसलमान हैं, जिन्हें वो साइंसी तरक़्क़ी के समरात (नतीजे) और टेक्नॉलोजी से महरूम रखने के लिये हर क़िस्म की साज़िशों और रेशा दवानियों (चालाकियों) से काम ले रहे हैं। दूसरी तरफ हमारा ये हाल है कि दौरे जदीद के अ़स्री व साइंसी उलूम की तरवीज और तालीम की बजाय हज़ारों साल पुराने यूनानी फलसफे जैसे मतरूक (तर्क किए हुए) उलूम को अभी तक सीने से लगाए हुए हैं और उन की तदरीस (पढ़ाई) हमारी इस्लामी दर्सगाहों में अभी तक शामिले निसाब चली आ रही है।

जदीद साइंस अपनी तवील तहक़ीक़ात के बाद जिन नताइज पर पहुँची है, उन में से ज़्यादातर क़ुरआन व हदीस में बयान कर्दा हक़ाइक़ की तौसीक़ व तसदीक़ करते हैं। इन हालात में तमाम मुस्लिम मुल्कों के औलमा व मुहक़्क़िक़ीन और साइंसदानों का फर्ज़े मन्सबी है कि वो सर जोड़ कर बैठें और आ़लमे इस्लाम को इल्मी व फिक्री इफलास और पसमान्दगी (पिछड़ेपन) से निजात दिलाने के लिये एक ऐसा लाइहए अ़मल इख़्तियार करें जिस से मौजूदा दिगरगों सूरते हाल का मदावा (हल) मुमकिन हो।

साइंसी उलूम की रोशनी में ''जदीद इल्मे कलाम'' की ज़रूरत

इस्लाम के शुरूआ़ती दौर में जब साइंसी उलूम अपने रहमे मादर (माँ के पेट) में थे और यूनानी फलसफा ही चहार दांगे आ़लम (पूरी दुनिया) में अ़क्ल का मेअ़यारे अतम्म (कामिल) तसव्वुर किया जाता था, तब हमारे अस्लाफ और अइम्मए किराम ने इस्लामी तालीमात व नज़रियात के फरोग़ (फैलाने) के लिये इस्लाम पर होने वाले फलसफियाना हम्लों का जवाब यूनानी फलसफे ही की ज़बान में दिया था और यही एक मोअस्सिर (असर पैदा करने वाली) सूरत थी जो ''इल्मे कलाम'' के नाम से मशहूर हुई। मौजूदा नस्ल साइंसी दौर में परवान चढ़ी है। आज का कम पढ़ा लिखा सादा इन्सान जिसे साइंसी उलूम से इस क़दर शग़फ (दिल चस्पी) नहीं, वो भी साइंसी तरीक़े कार से कम अज़ कम ज़रूर आगाह है और जानता है कि साइंसी बुनियादों पर काम करने से किस तरह नताइज $2 + 2 = 4$ की तरह मन्तिक़ी अन्दाज़ से दुरुस्त बरामद होते हैं। दौरे हाज़िर के इन्सान से मुख़ातिब होने और उसे इस्लामी तालीमात व अ़क़ाइद से आगाह कराने के लिये ''जदीद इल्मे कलाम'' की ज़रूरत है। मौजूदा दौर ''सुग़रा'' और ''कुबरा'' के दरमियान मौजूद ''हदे औसत'' को गिरा कर ''नतीजे'' तक पहुँचने का दौर नहीं बल्कि इस दौर में तजर्बा, मुशाहिदा, मफरूज़ा और फिर बारहा तजर्बात से हासिल होने वाले तन्ज़ीम शुदा नताइज के ज़रिये ''नज़रिये'' तक पहुंचने का उसलूब (तरीक़ा) ''हक़ीक़त'' तक रसाई (पहुँचने) के अ़क्ली उसलूब (तरीक़े) के तौर पर माना जाता है।

अव्वलीन दौर में यूनानी फलसफे की इस्लामी अ़क़ाइद पर यलग़ार (हमले) के जवाब में उस दौर के अइम्मए किराम ने इल्मे कलाम को फरोग़ दिया और उस के ज़रिये ये साबित कर दिया कि इस्लाम ही दीने बर हक़ है। आज अगर हम इस्लाम की हक़ीक़ी ख़िदमत और तब्लीग़े दीन का फरीज़ा सर अंजाम देने के ख़्वाहिशमन्द हैं तो हमें उन्हीं अइम्मए किराम के नक़्शे क़दम पर

चलते हुए मौजूदा दौर की अ़क़्ल की कसौटी......साइंसी तरीक़े कार.....के मुताबिक़ इस्लाम की तरवीज व इशाअ़त का फरीज़ा सर अंजाम देना होगा और मुख़ालिफीन के नाज़ैबा और इस्लाम कुश तरीक़ों का सद्दे बाब करने के लिये ''जदीद इल्मे कलाम'' अपनाना होगा, जिस में साइंसी अन्दाज़े फिक्र रखने वाले मुआ़शरों (समाजों) तक इस्लाम का पैग़ाम बहुस्नो ख़ूबी पहुँचाने का इन्तेज़ाम हो।

इस्लाम का मोअस्सिर और ख़ातिर ख़्वाह दिफाअ़ सिर्फ इसी सूरत में मुमकिन है कि हम दीन के इल्म को मज़बूत बुनियादें फराहम करने के लिये नस्ले नौ के तलबा को जदीद साइंसी उलूम और नज़रियात व तहक़ीक़ात से शनासा करें ताकि उन तालीमात की रोशनी में वो अ़स्री उलूम से मुसल्लह होकर उन हमलों का मुक़ाबला कर सकें जो मग़रिब की तरफ से इस्लाम पर किये जा रहे हैं। क़ुरआनो सुन्नत की तालीमात का फरोग़ तो कुजा महज़ उनका दिफाअ़ भी इस के बग़ैर मुमकिन नहीं। हमारा ये इक़दाम बिऐनिही अपने अस्लाफ की सुन्नत पर अ़मल होगा। जिस तरह उन्होंने अपने ज़माने में यूनानी फल्सफा का शामिले निसाब करके और यूनानी उलूम पर दस्तरस हासिल कर के यूनानियों के ग़ैर फितरी फिक्रो फलसफा का रद्द किया, उसी तरह हमें भी जदीद साइंस पर यदे तूला हासिल करके मग़रिबी मुल्हिदाना व काफिराना नज़रियात व तसव्वुरात का रद्द करना होगा। बसूरते दीगर इस्लाम की निशाते सानिया का ख़्वाब किसी तौर पर भी शर्मिन्दाए तअ़बीर नहीं हो पाएगा। फी ज़माना सूरते हाल ये है कि इल्म तो अपनी मेअ़राज की तरफ सरगर्दां है और हम यकसर लकीर के फक़ीर बने हुए अपनी उसी रविश पर क़ायम हैं। इस से पहले इस्लाम दुश्मन ताक़तें हमें सफहए हस्ती से मिटा दें हमें अपनी हिकमतो दानिश से मोअस्सिर इक़दाम के ज़रिए उनके बुरे इरादों को ख़ाक में मिलाना होगा।

उठो व गर ना हश्र न होगा फिर कभी बपा।
दौड़ो ज़माना चाल क़यामत की चल गया।।

नाम निहाद मुबल्लिग़ीन का रूहानी इस्लाम से फरार

कितनी बदक़िस्मती की बात है कि इस ख़लफशार और बे यक़ीनी के दौर में जब इस्लाम को हर तरफ से तख़्ताए मश्क़ बनाया जा रहा है, उम्मते मुस्लिमा ही के कुछ ऐसे अफराद नाम निहाद वाइज़ीन व मुबल्लिग़ीन के लबादे में मसरूफे अ़मल हैं, जिन्होंने रूहानी इस्लाम की तब्लीग़ व तरवीज के बजाय इस्लाम के माद्दी तसव्वुर को उभारना अपना मतमए नज़र बना लिया है। रूहानियत की नफी, इश्क़े रसूल ﷺ का इन्कार, मोअ़ज्ज़ात का रद्द और कश्फ की तकज़ीब पर अपनी ज़बानो क़लम का ज़ोर सर्फ करना उनका शिआ़र है। औलिया व सूफिया की मुहब्बत और उनकी तालीमात से इन्कारी होकर वो इस्लाम का ऐसा मन गढ़त तसव्वुर पेश करते हैं जो उनकी माद्दी तौजीह से तो हम आहंग है लेकिन इस्लाम की हक़ीक़ी तालीमात के साथ उस का दूर का भी इलाक़ा नहीं। यूं इस नुक्ते पर आकर उन की और दुश्मनाने इस्लाम मुस्तशरिक़ीन की बोलियां किसी हद तक एक दूसरे से मिल भी जाती हैं। इसलिए कि **इस्लाम दुश्मन नज़रियात के हामिल मग़रिबी दानिशवर और मुस्तशरिक़ीन भी उम्मते मुस्लिमा को उसी सर चश्मे से दूर करना चाहते हैं जो रूहानियत से फूटता है और ये नाम निहाद मुबल्लिग़ीने इस्लाम भी रूहानियते इस्लाम के फैज़ान से मुन्किर होकर उनके हमनवा बन गए हैं।**

अग़यार तो बबांगे दुहल ये बात कहते नहीं थकते कि चौदह सदियां गुज़र जाने के बाद भी पैग़म्बरे इस्लाम ﷺ किस तरह ज़िन्दा और रूहानी फैज़ान के हामिल हो सकते हैं? ये कज निहाद और बर ख़ुद ग़लत औलमा भी यहीं बात कहते हैं कि हमारा नबी ज़िन्दा नहीं। वो सिर्फ क़ुरआन को मानने का दावा

करते हैं और साहिबे क़ुरआन की अज़्मत व रूहानियत से इन्कारी हैं।

ये एक नाक़ाबिले तरदीद हक़ीक़त है कि दीनी मदारिस में तब्लीग़े दीन का फरीज़ा सर अंजाम देने वाले औलमा का अ़वाम की बड़ी अक्सरियत से राब्ता और तअ़ल्लुक़े ख़ातिर बिल्कुल कट चुका है। वो मैदान जहां तब्लीग़ की अस्ल ज़रूरत है, वो उनके हल्क़ए असर से बाहर है। इस वक़्त इस्लाम के नज़रियात व तसव्वुरात की जंग जिस सतह पर मशरिक़ से मग़रिब तक, अ़रबो अ़जम की सर ज़मीन पर शद्दो मद के साथ लड़ी जा रही है, वो हमारे आम औलमा की पहुँच से बाहर है। अगर हमारे औलमा में से कोई कुफ्रो इल्हाद के मअ़रकों का मुक़ाबला करने के लिये वहां पहुँचता भी है तो वो अस्री उलूम से महरूमी की बिना पर दअ़वत व तब्लीग़ के लिये उन दलाइल का सहारा लेता है जो क़ुरआनो सुन्नत और दौरे हाज़िर की इल्मी तहज़ीब की सतह से कहीं नीचे है। उनके पास सिर्फ किताबी व करामाती दलाइल हैं या तज़करे, मुनाज़रे, फतवे और अशआ़र से मुज़य्यन बातें और तन्क़ीदें, जिन से वो आज के साइंसी ज़हन की तसल्ली व तशफ्फी नहीं कर सकते। जिस का नतीजा ये निकलता है कि वो क़ुरआनी आयात और अहादीसे मुबारका से जो मौक़िफ साबित करना चाहते हैं वो उन से नहीं हो पाता और ख़ल्ते मबहस से ये नहीं खुल पाता कि क्या सही है और क्या ग़लत! वो क़ुरआनी आयात और अहादीस की ग़लत तफ्सीर व तौजीह करके इस बात का शिर्क और बिदअ़त साबित करते हैं जो शिर्क और बिदअ़त नहीं। इसी तरह फतवों का कारोबार गरम करके वो तकफीर साज़ी के कारखाने खोले हुए हैं, जिन से वो जिसे चाहें एक मिनट में काफिर साबित कर देते हैं। यूं ये कहना बेजा न होगा कि क़ुरआनो सुन्नत का नाम लेकर क़ुरआनो सुन्नत पर मब्नी अ़क़ीदे की जड़ें काटी जा रही हैं और कोई उनके क़लम और ज़बान को रोकने वाला नहीं।

(इस मौजूअ़ पर इस्लामी अ़क़ीदे की जुज़इयात से आगही के लिये राक़िम की कुतुब ''अ़क़ीदए तौहीद और हक़ीक़ते शिर्क'' और ''तसव्वुरे बिदअ़त और उस की शरई हैसियत'' का मुतालआ़ किया जा सकता है।)

नस्ले नौ को रूहानी इस्लाम की तरग़ीब

इशाअ़त व तब्लीग़े दीन के ज़रिये नई नस्ल को इस्लामी तालीमात पर अ़मल पैरा होने की अ़क्ली व साइंसी तरग़ीब वक़्त की अहम ज़रूरत है। लेकिन मक़ामे अफसोस है कि हमारे कज फिक्र नाम निहाद मुबल्लिग़ीने इस्लाम क़ुरआनो हदीस ही के नाक़िस इस्तिम्बात व इस्तिदलाल का सहारा लेते हुए नौजवानों को इस्लामी तालीमात के क़रीब लाने की बजाय उन की दीन से दूरी का बाइस बन रहे हैं।

मौजूदा दौरे फितन के पेशे नज़र उमूमन देखने में आता है कि आ़म तौर पर औ़लमाए किराम इस्लाम की सही वकालत में नाकामी की सूरत में ज़माने को बुरा भला कहने लग जाते हैं। अपने नामुनासिब तर्ज़े अ़मल और ज़माने का साथ न दे सकने वाले फिक्र पर नज़रे सानी की बजाय ज़माने को गाली देकर अपने फराइज़े मन्सबी से सुबुकदोश हो जाना एक आसान काम है। इसी वजह से सरवरे कायनात ﷺ ने इरशाद फरमाया :

لَا تَسُبُّوْا الدَّهْرَ فَإِنَّ اللّٰهَ هُوَ الدَّهْرُ۔

ज़माने को गाली न दो, ज़माना ख़ुद ख़ुदा है।

(मुसनद अहमद बिन हम्बल, 5: 299, 311)

सरकारे दो आ़लम (ﷺ) का ये फरमाने मुबारक अपने अन्दर बेश बहा लताइफ व मआ़रिफ का ख़ज़ाना रखता है। ज़माने को बुरा कहने से कोई बात नहीं बनेगी बल्कि उस के बरअ़क्स मुआ़मला और बिगड़ जाएगा। इसलिए

कि ज़माने का काम अ़द्ल (इंसाफ) करना है। उसे सुस्त निहाद व सुस्त कोश मुसलमानों के नफा व नुक़सान से कोई सरोकार नहीं। वो तो उसके हक़ में फैसला देगा जो अपना मौक़िफ बेहतर तरीक़े से उस के सामने पेश करेगा।

औ़लमा व मुबल्लिग़ीन की एक बड़ी अक्सरियत आ़म तौर पर क़ुरआनो हदीस को जिस अन्दाज़ से पेश कर रही है, वो नई नस्ल को इस्लाम की तरफ राग़िब करने की बजाय उसके अन्दर मज़हब बेज़ारी और गुमराही के रुजहानात को फरोग़ दे रहा है। वही क़ुरआन जो सरापा हिदायत है, उसकी मनमानी और ग़लत तशरीहात से गुमराही भी हासिल की जा सकती है और ऐसा हक़ीक़त में हो रहा है। क़ुरआने हकीम अपने बारे में ख़ुद फरमाता है :

يُضِلُّ بِهٖ كَثِيْراً وَّ يَهْدِىْ بِهٖ كَثِيْراً۔

तर्जमा : ये (क़ुरआन) बहुत सों को गुमराह कर देता है और बहुत सों को हिदायत देता है। (अल-बक़रा: 2, 26)

आ़लमे इस्लाम की मौजूदा नौजवान नस्ल जदीद साइंसी तालीम से आरास्ता होकर करुआनो सुन्नत पर मब्नी उन अ़क़ाइद व नज़रियात और आमाल को तन्क़ीदी नज़र से देखने लगी है और उन्हें अवहाम व रुसूम से ज़्यादा दर्जा देने को तैयार नहीं, जो बुजुर्गों से उन तक रिवायती अन्दाज़ में पहुचें हैं। मग़रिबी युनिवर्सिटियों से तालीम याफ्ता जदीद नस्ल जब रूहानी सिलसिलों का नाम सुनती है तो वो अपने बुजुर्गों के सामने जुरअते लब कुशाई करते हुए इस्तिफसार करने लगती है कि ये क़ादरी, सुहरवर्दी, और चिश्ती सिलसिले क्या हैं? इन की इफादियत और ज़रूरत क्या है? मशाइख़ और पीराने किराम को हम अपना रहबर व रहनुमा क्यों मानें? जो कुछ माँगना हो बराहे रास्त ख़ुदा से क्यों न माँगा जाए? ये तवस्सुल और वास्ता क्योंकर ज़रूरी

है? (इस सिलसिले में राक़िम की कुतुब ''मसअलए इस्तिग़ासा और उसकी शरई हैसियत'' और ''क़ुरआनो सुन्नत और अ़क़ीदए तवस्सुल'' का मुतालआ़ मुफ़ीद होगा।) इस तरह के हज़ारों सवालात जो पढ़ी लिखी नौजवान नस्ल के ज़हनों में परवरिश पाते हैं, कभी कभार नौके ज़बान पर भी आ जाते हैं। अब बजाय दलील से बात करने और समझाने के हम नई नस्ल की लब कुशाई (बात) को दरीदा ज़हनी और गुस्ताख़ी पर महमूल करने लगते हैं और उन्हें कहते हैं कि तुम गुस्ताख़ हो और अपने बाप दादा के तरीक़े से फिरकर भटक गये हो। हमारी इस डांट डपट और धमकी आमेज़ गुफ्तगू से आ़रज़ी तौर पर उन का अपनी ज़बानें बन्द कर लेना तो किसी हद तक मुमकिन है मगर कुछ ही अर्सा बाद वो इस्लामी तालीमात से मुकम्मल तौर पर बाग़ी और सरकश हो जाएंगे। दीन से इस दर्जा दूरी और बाग़ियाना रविश का एक सबब पुरानी नस्ल का अपनी नई नस्ल के सामने दीनी तालीमात और उनके असरात को जदीद अन्दाज़ और अ़स्री इल्म की ज़बान में बेहतर तौर पर पेश न कर सकना है।

एक नसीहत आमोज़ वाक़िआ़

राक़िम को लन्दन में एक तन्ज़ीमी व तहरीकी दौरे में क़याम के दौरान एक ऐसा वाक़िआ़ पेश आया जिस का मौज़ूअ़ की मुनासिबत से मुख़्तसर तज़किरा फाइदे से ख़ाली न होगा।

हमारे एक बुजुर्ग हैं, जिन से हमारी बरसों से दोस्ती है। वो और उनके वालिदे गिरामी साहिबे निस्बते मिजाज़ बुजुर्ग हैं। एक दिन वो मेरी क़यामगाह पर मुझ से मिलने आए और अपना सर पकड़कर बैठ गए....बल्कि रोहांसे से हो गये। पूछा कि हज़रत क्या बात है? ख़ैरियत तो है? कहने लगे...ख़ैरियत कैसी!

।।इस घर को आग लग गई घर के चराग़ से ।।

फिर फरमाया कि मैंने अपने बच्चे को दीन की तालीम हासिल करने के लिये एक मस्जिद में भेजा था, जहां क़ुरआन मजीद का दर्स होता था। बच्चा कुछ दिन जाता रहा फिर मस्जिद से ऐसा लौटा कि दोबारा कभी उस मस्जिद का रुख़ न किया। पूछने पर कहने लगा..... ''मैं वहां दर्से क़ुरआन सुनता रहा. .... लेकिन जो कुछ भी सुना, वो तो इल्म व अ़क़्ल से परे की बातें थीं ...... मेरा ज़हन ऐसे देव मालाई क़िस्सों और बे सरो पा बातों को तस्लीम नहीं करता''। क्या करूं वो बच्चा जिसे दीन सीखने के लिये भेजा था, वो अपने अ़क़ीदे, मस्लक और सरवरे आ़लम ﷺ की शान ग़र्ज़ यह कि हर चीज़ का मुन्किर हो गया।

मैंने कहा कि ''आप शाम का खाना मेरे साथ खाएं और उस बच्चे को अपने साथ ले आएं, मेरा मक़सद सिर्फ उस बच्चे को समझाना और उस पर दीन की रूह वाज़ेह करना है''। मगर उस ने ये कह कर आने से इन्कार कर दिया कि ''क़ादरी साहब तो बिदअ़ती और मुश्रिक हैं''। ये सूरते हाल देखकर मैं ख़ुद उसके पास गया, उस का माथा चूमा, प्यार किया और कहा : ''बेटे! हम आप के घर मेहमान आए हैं, आप हमारे पास बैठें तो सही''। उसके वालिद को भी बुलाया और कहा कि बच्चे के ज़हन में जो भी एतराज़ और जवाब तलबे सवालात हैं। वो एक एक करके बयान कर दें। वो बयान करते गये और मैं उन सवालों का जवाब देता गया, घंटा भर की बैठक में वो ज़हनी तौर पर पचास फीसद मुत्मइन हो गया। जब हम उठ के जाने लगे तो उसने पूछा : ''आप कितने दिन यहाँ ठहरेंगे''? ..... ''दो तीन दिन'' हम ने जवाब दिया... वो कहने लगा : ''एक घंटा और दे दें''। मैंने कहा : ''सिर्फ आप के लिये नहीं बल्कि अपने दूसरे साथियों को भी ले आएं..... सब के

लिये एक खुली मज्लिस होगी।'' चुनांचे ऐसा ही हुआ। जब दूसरी आ़म नशिस्त अपने इख़्तिताम को पहुँची तो वो बच्चा रुख़सत होते वक़्त मुझ से लिपट गया और कहने लगा : ''अल्लाह आप का भला करे, आपने मुझे गुमराही में मुब्तला होने से बचा लिया।'' अब वो बच्चा बिहम्देही तआ़ला सहीह अ़क़ीदे का है और इस्लामी तालीमात का पाबन्द है।

यूरोप में रहने वाले जो अपने वतनों को छोड़ चुके हैं, जिन की औलादें आ़म तौर पर उसी जदीद तालीम याफ्ता माहौल में पल बढ़कर जवान हुई हैं, अक्सरो बेशतर इसी तरह के सवालात से दो चार हैं। सिर्फ हमारी ना समझी और जदीद उलूम से ना वाक़्फियत की बिना पर उनके दिलो दिमाग़ सही इस्लामी अ़क़ीदे और तालीमात से मुन्हरिफ (चेंज) हो रहे हैं, जिस की तमाम तर ज़िम्मेदारी हमारे ऊपर आ़इद होती है। अगर वक़्त के तक़ाज़े को समझते हुए इस्लाम को सही तरीक़े से पेश किया जाए तो कोई बड़ी बात नहीं कि हम जदीद (नई) नस्ल के ईमान को ख़राब होने से बचा न लें। ज़रूरत इस बात की है कि हम अपनी औलादों को जदीद तालीम के साथ साथ दीन की तालीम भी सही साइंसी तरीक़े से दें ताकि वो अ़क़ाइदे इस्लामिया पर मज़बूती और पुख़्तगी के साथ जमे रहें।

वक़्त का अहम तक़ाज़ा

नौजवानों में इस्लाम की अज़ीम रूहानी तालीमात को वाज़ेह करने के लिये ये बात इन्तेहाई अहम है कि सलासिले तरीक़त और ख़ानक़ाही निज़ाम के अरबाबे फिक्रो नज़र अपनी औलाद की तालीम पर ख़ुसूसी तवज्जोह दें और उन की तर्बियत सही तरीक़े से करें ताकि इस्लाम का रूहानी विरसा (तर्का) ज़माने की दस्त बुर्द से तबाह होने से बच जाए। इस दौरे पुरफितन में बहुत कम ख़ानक़ाहें और रूहानी ख़ानवादे माद्दियत की यलग़ार से महफूज़ रह गये

हैं और ख़ाल ख़ाल (कुछ) ही ऐसे रह गये हैं जिन्हें देखकर अस्लाफ की याद दिलो दिमाग़ में ताज़ा हो जाए। अक्सर ये बात मुशाहिदे में आई है कि ख़ानक़ाहों की रूहानी बुनियाद गिर गई है और अस्लाफ के क़ायम कर्दा उन रूहानी मर्कज़ों पर सिर्फ ज़वाहिर परस्ती डेरा डाले हुए है। ऐसे हालात के पेशे नज़र हकीमुल उम्मत ने फरमाया था :

ख़ानक़ाहों में कहीं लज़्ज़ते असरार भी है?
मदरसों में कहीं रअ़नाइये अफकार भी है?

औलिया अल्लाह का मक़ाम .... क़ुरआन की नज़र में

क़ुरआने मजीद का अन्दाज़ और बयान का तरीक़ा अपने अन्दर हिकमत व नसीहत का पैराया लिये हुए है। इसी नसीहत भरे अन्दाज़ में बअ़ज़ अवक़ात आयाते क़ुरआनी के बराहे रास्त मुख़ातिब हुज़ूर सरवरे दो आ़लम ﷺ की ज़ात होती है लेकिन आप ﷺ के वसीले से पूरी उम्मत को हुक्म देना मक़सूद होता है। क़ुरआन मजीद की दर्ज ज़ैल आयते करीमा में अल्लाह तआ़ला ने अपने महबूब ﷺ से इरशाद फरमाया :

يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدَاةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيْدُوْنَ وَجْهَهٗ وَ لَا تَعْدُ عَيْنٰكَ عَنْهُمْ ۚ تُرِيْدُ زِيْنَةَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَ لَا تُطِعْ مَنْ اَغْفَلْنَا قَلْبَهٗ عَنْ ذِكْرِنَا وَ اتَّبَعَ هَوٰىهُ وَ كَانَ اَمْرُهٗ فُرُطًا۝

(الكهف،١٨:٢٨)

तर्जमा : (ऐ मेरे बन्दे!) तू अपने आप को उन लोगों की संगत में जमाए रखा कर जो सुब्हो शाम अपने रब को याद करते हैं, उसकी रज़ा के तलबगार रहते

हैं, तेरी (मुहब्बत और तवज्जोह) की निगाहें उन से न हटें। क्या तू (उन फक़ीरों से ध्यान हटाकर) दुन्यवी ज़िन्दगी की आराइश चाहता है? और तू उस शख़्स की इताअ़त भी न कर जिस के दिल को हम ने अपनी याद से ग़ाफिल कर दिया है और वो अपने नफ़्स की ख़्वाहिशात की पैरवी करता है और उस का हाल हद से गुज़र गया है।

इस इरशादे रब्बानी में हुज़ूर ﷺ के तवस्सुत से उम्मते मुस्लिमा के आ़म अफराद को ये हुक्म दिया जा रहा है कि वो उन लोगों का साथ और सोहबत इख़्तियार करें और उन की मज्लिस में दिलजमई के साथ बैठे रहा करें। जो सुब्हो शाम अल्लाह के ज़िक्र में मस्त रहते हैं और जिन की हर घड़ी यादे इलाही में बसर होती है। उन्हें उठते, बैठते, चलते, फिरते किसी और चीज़ की तलब नहीं होती। वो हर वक़्त अल्लाह की रज़ा के तलबगार रहते हैं। ये बन्दगाने ख़ुदा सिर्फ अपने मौला की आरज़ू रखते हैं और उसी की आरज़ू में जीते हैं और अपनी जान जाने आफरीं के हवाले कर देते हैं। अल्लाह के वलियों की ये शान है कि जो लोग अल्लाह तआ़ला के होना चाहते हैं उन्हें चाहिये कि सब से पहले वो इन औलिया अल्लाह की सोहबत इख़्तियार करें। चूंकि वो ख़ुद अल्लाह के क़रीब हैं और इसलिए अल्लाह तआ़ला ने आ़म मुसलमानों को उनके साथ जुड़ जाने का हुक्म फरमाया। मौलाना रूम ؒ ने यही क़ुरआनी नुक़्ता अपने इस ख़ूबसूरत शअ़र में यूं बयान किया है :

हर के ख़्वाही हमनशीनी बा ख़ुदा।
ऊ नशीनद सोहबते बा औलिया।।

तर्जमा : जो कोई अल्लाह तआ़ला की कुर्बत (नज़दीकी) चाहता है उसे चाहिये कि वो अल्लाह वालों की सोहबत इख़्तियार करे।

ग़ौसे आज़म सय्यदना अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी ؒ, हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी ؒ, हज़रत बहाउद्दीन ज़करिया मुल्तानी ؒ, हज़रत शाह रुकने आ़लम ؒ और हुज़ूर दाता गंज बख़्श ؒ उन लोगों में से थे जिन्होंने ख़ुद को अल्लाह के क़रीब कर लिया था। ऊपर ज़िक्र की गई आयते करीमा में ऐसे ही लोगों की सोहबत इख़्तियार करने और उन से फैज़ हासिल करने का हुक्म दिया गया है। यानी जो शख़्स अल्लाह के वली की मजलिस में बैठेगा उसे अल्लाह की क़ुर्बत और मजलिस नसीब होगी।

ये वो लोग हैं जिन्हें न जन्नत का लालच है और न विलायत का, न करामत का शौक़ है और न शोहरत की तलब, ये न हूरों की तमन्ना रखते हैं न महलों की। इन का एक मक़सद अल्लाह का दीदार है और ये सिर्फ अल्लाह के जलवों के तलबगार हैं। लिहाज़ा आ़म लोगों को तालीम दी गई है कि जो लोग मेरे (अल्लाह के) दीदार के तलबगार हैं उन्हें भी उन का दीदार करना चाहिये और अपनी नज़रें उनके चेहरों पर जमाए रखनी चाहिये। जबकि दूसरी तरफ अल्लाह तआ़ला की याद से ग़ाफिल लोगों से दूर रहने का हुक्म दिया गया है।

وَ لَا تُطِعْ مَنْ أَغْفَلْنَا قَلْبَهٗ عَنْ ذِكْرِنَا۔
(الكهف،١٨:٢٨)

तर्जुमा : और तू उस शख़्स की इताअ़त न कर जिस के दिल को हम ने अपनी याद से ग़ाफिल कर दिया है।

इसी तरह सूरए अन्आ़म में इरशादे रब्बानी हुआ :

فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرٰى مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ٥
(انعام،٦:٦٨)

पस तुम याद आने के बाद (कभी भी) ज़ालिम क़ौम के साथ न बैठा करो।

इन आयाते मुबारका में ये बात सराहत के साथ वाज़ेह हो जाती है कि अल्लाह तआ़ला की बारगाह से दूर हटाने वालों के साथ नशिस्तो बरख़ास्त (उठने बैठने) से भी बचा जाए। उस की मुहब्बत और तवज्जोह के हुसूल के लिये तालिबाने हिरसो हवस और बन्दगाने दुनिया की सोहबत को पूरे तौर पर तर्क (छोड़ना) करना और औलिया अल्लाह की निस्बत और संगत को दिलजमइ के साथ इख़्तियार करना निहायत ज़रूरी है। बक़ौले शाइर :

सोहबते सालेह तुरा सालेह कुनद।
सोहबते तालेअ़ तुरा तालेअ़ कुनद।।

औलिया अल्लाह की सोहबत किसलिए?

यहाँ सवाल पैदा होता है कि गौशए तन्हाई में बैठकर अल्लाह अल्लाह करने की बजाय औलिया अल्लाह की संगत और हमनशीनी इख़्तियार करने की क्या ज़रूरत है? उनके सिलसिले में आने, बैअ़त करने और निस्बत क़ायम करने की शरीअ़त में क्या अहमियत है? चाहिये तो ये था कि सारा मुआ़मला बराहे रास्त अल्लाह से उस्तवार कर लिया जाता और सीधा उसी से तअ़ल्लुक़ और नाता जोड़ने की कोशिश की जाती। आख़िर बन्दों को दरमियान में लाने और उन्हें अल्लाह से क़रीब होने के लिये वास्ता बनाने की क्या ज़रूरत है जबकि मक़सूदे कुल अल्लाह तबारक व तआ़ला ही की ज़ात है?

ये सवाल आज के दौर में दो वजूहात की बिना पर इन्तेहाई अहमियत का हामिल है। एक इसलिए कि ज्यों ज्यों ज़माना आगे गुज़रता जा रहा है, रूहानियत और रूहानी फिक्र मिटता चला जा रहा है। माद्दियत और माद्दी फिक्रे दुन्यवी तालीम के साथ साथ मज़हबी तालीमात पर भी ग़ालिब आता जा रहा है और अच्छे भले तालीम याफ्ता लोग दीन और मज़हब को भी माद्दी पैमानों पर परखने लगे हैं। इस सवाल की पैदाइश का दूसरा बड़ा सबब ये है कि आज का दौर बे अ़मली के साथ साथ बद अ़क़ीदगी का दौर भी है। मज़हबी और दीनी हल्क़ों में नाम निहाद ख़ालिस तौहीद परस्त तबक़े औलिया अल्लाह की अज़मत के साफ मुन्किर हैं और उन से मन्सूब तालीमात को शिर्क व बिदआ़त का पुलिन्दा क़रार देते हैं। उनके नज़दीक इस्लाम के रूहानी निज़ाम की न तो शरई अहमियत है और न इस की कोई तारीख़ी हैसियत ही है। इस का नतीजा ये हुवा कि लोग सीधे रास्ते से भटक कर औलियाए किराम की तालीमात और उनके अज़ीम सिलसिलों और निस्बतों से दूर होते चले जा रहे हैं। इस तरह की बातें आज कल बड़ी शिद्दत से ज़ोर पकड़ रही हैं और ये

सवाल ज़हनों को मुसलसल परागन्दा (Confuse) कर रहे हैं कि औलिया व सूफिया को अल्लाह और बन्दे के दरमियान वास्ता मानने को अज़ रूए शरीअ़त क्या जवाज़ है! जब हम इस सवाल का जवाब कु़रआने मजीद से पूछते हैं तो वो हमें सराहतन बताता है कि बन्दों और ख़ुदा के दरमियान औलिया अल्लाह को ख़ुद अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने हादी व रहबर के तौर पर डाला है। किसी इन्सान की इतनी मजाल कहाँ कि वो ऐसी जसारत कर सके! इस बारे में कु़रआने मजीद के अल्फाज़ : "وَاصْبِرْ نَفْسَکَ" इस हुक्म की नशानदही करते हैं कि औलिया अल्लाह को हिदायत इलल्लाह के लिये दरमियानी वास्ता बनाए बग़ैर कोई चारा नहीं और अल्लाह तआ़ला तक पहुँच की यही सूरत है कि उसके दोस्तों से लौ लगाई जाए। जब उन से यारी हो जाएगी तो वो ख़ुद अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की बारगाह का रास्ता दिखाएंगे।

अज़ल से सुन्नते इलाही यही है

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने अपनी तौहीद को पैग़ाम अपने बन्दों तक पहुँचाने के लिये अम्बिया को भेजा, जो हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से लेकर नबीए आख़िरुज़्ज़माँ ﷺ तक हर दौर में उस फरीज़ए नबुव्वत को अच्छे तरीके़ से सर अंजाम देते रहे। इब्तिदाए आफरीनश से अल्लाह तआ़ला की ये सुन्नत रही है कि वो मख़लूका़ते आ़लम तक अपना पैग़ाम अम्बिया की वसातत से पहुँचाता रहा है। अम्बिया की ज़ाहिरी हयात के दौर में उन को अपने और बन्दों के दरमियान रखा और अब जबकि नबुव्वत का दरवाज़ा हमेशा के लिये बन्द हो चुका है तो इसी काम के लिये औलिया अल्लाह को मामूर किया जाता रहा और ये सिलसिला ता क़यामे क़यामत अबदुल आबाद तक जारी व सारी रहेगा।

ये अल्लाह की सुन्नत है कि वो अपनी तौहीद का पैग़ाम अपने बन्दों को देना चाहता है तो "قُلْ هُوَ اللهُ أَحَدٌ" फरमाता है। यानी ऐ मेरे महबूब ﷺ! आप अपनी ज़बान से कह दें कि अल्लाह एक है। अगर कोई कहे कि ऐ अल्लाह! तू ख़ुद अपनी तौहीद का ऐलान क्यों नहीं करता? ..... तू ख़ुद ही फरमा दे कि मैं एक हूँ! अल्लाह तआ़ला जवाब देता है कि नहीं ये मेरी शान नहीं कि बन्दों से अज़ ख़ुद कलाम करूं और न ही किसी बशर की मजाल कि वो अल्लाह से बराहे रास्त कलाम करे। अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने फरमाया :

مَا كَانَ لِبَشَرٍ أَنْ يُكَلِّمَهُ اللهُ إِلَّا وَحْياً أَوْ مِنْ وَّرَآئِ حِجَابٍ أَوْ
يُرْسِلَ رَسُوْلاً فَيُوْحِىَ بِإِذْنِهِ مَا يَشَآءُ ط إِنَّهُ عَلِىٌّ حَكِيْمٌO
(شوریٰ،۴۲:۵۱)

तर्जमा : और किसी आदमी की ये ताक़त नहीं कि अल्लाह से (बराहे रास्त) बात करे मगर हां (इसकी तीन सूरतें हैं या तो) वही (के ज़रिए) या पर्दे के पीछे से या (अल्लाह) किसी फिरिश्ते को भेज दे कि उसके हुक्म से जो अल्लाह चाहे वही करे, बेशक वो बड़े मर्तबा वाला, हिकमत वाला है।

अल्लाह तआ़ला का ये फरमान इस अम्र पर दलालत करता है कि वो ये काम अपने मुन्तख़ब मुकर्रम बन्दों से कराता है, जिन्हें मन्सबे रिसालत पर फाइज़ कर दिया जाता है। इरशादे बारी तआ़ला है कि मैं अपने उस नबी और रसूल ही से कलाम करता हूँ जिसे मन्सबे नबुव्वत व रिसालत से सरफराज़ फरमाता हूँ और अपने उस महबूब को अपना हमराज़ बनाता हूँ और उसे अपनी ख़बर देता हूँ। इसलिए फरमाया : ऐ महबूब! तुझे मैंने अपना रसूल बनाया है, तू ही मेरे बन्दों के पास जा और उन्हें मेरी यकताई की ख़बर दे और जो कलाम मैंने तुझ से किया है वो उन तक पहुँचा दे।

आयते मुबारका : قُلْ هُوَ اللهُ أَحَدٌ में लफ्ज़े "قُلْ" रिसालत है, जबकि هُوَ اللهُ أَحَدٌ वो अल्लाह एक है ...... ये अल्फाज़ अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की तौहीद पर दलालत करते हैं। इस आयते करीमा से ये पता चला कि तौहीद के मज़्मून का उन्वान भी रिसालत है ताकि लोगों को इस मामले से बाख़बर कर दिया जाए कि अल्लाह एक है और वही सब का रब है।

इस से ये नुक्ता खुला कि सुन्नत यही है कि वो किसी से बराहे रास्त कलाम नहीं करता और अगर वो किसी से कलाम करना चाहता है तो दरमियान में वास्तए रिसालत ज़रूर लाता है। अब किस की मजाल है कि वो रसूल के वास्ते के बग़ैर उस से हमकलाम होने की कोशिश करे! आयए तौहीद से ये बात वाज़ेह हो गई कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त अपने बन्दों से हम कलाम होने के लिये अपने रसूल का वास्ता दरमियान में लाता है ..... तो जब वो ख़ुदा होकर अपने बन्दों से हमकलाम होते वक़्त रसूल का वास्ता दरमियान में लाने से इज्तेनाब नहीं करता तो हम बन्दे होकर उस के रसूल का वास्ता लाए बग़ैर उस से रब्त व तअ़ल्लुक़ क्योंकर बरक़रार रख सकते हैं! ये अल्लाह तआ़ला का हुक्म है और हम उस के हुक्म के पाबन्द हैं, उस से रू गर्दानी नहीं कर सकते।

बख़ुदा ख़ुदा का यही है दर

रब्बे जुल जलाल ने ये बुनियादी नुक्ता, कुल्लिया और असलुल उसूल बयान करमा दिया कि मेरी इताअ़त का रास्ता मेरे रसूल ﷺ की इताअ़त के रास्ते से होकर गुज़रता है। कलामे मजीद में इरशाद हुआ :

مَنْ يُّطِعِ الرَّسُوْلَ فَقَدْ أَطَاعَ اللهَ۔
(النساء،۴:۸۰)

तर्जमा : जो रसूल ﷺ की इताअ़त करता है तहक़ीक़ उसने अल्लाह की इताअ़त की।

इस आयते करीमा में अल्लाह तआ़ला दो टूक ऐलान फरमा रहा है कि "ऐ मेरे बन्दों! ये बात हमेशा के लिये अपने पल्ले बाँध लो कि तुम में से जो कोई मेरी इताअ़त का ख़्वाहिशमन्द हो उसे चाहिये कि पहले मेरे मुस्तफा ﷺ की इताअ़त को अपने ऊपर लाज़िम करे। मेरे मुस्तफा ﷺ की इताअ़त ही मेरी इताअ़त है, ख़बरदार! मेरे रसूल ﷺ की इताअ़त के बजा लाए बग़ैर मेरी इताअ़त का तसव्वुर भी न करना।"

क़ुरआने मजीद ने इस नुक्ते को ये कह कर और वाज़ेह फरमा दिया :

قُلْ إِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللهَ فَاتَّبِعُوْنِىْ يُحْبِبْكُمُ اللهُ۔
(آل عمران،۳:۳۱)

तर्जमा : (ऐ हबीब! ﷺ) फरमा दें कि अगर तुम अल्लाह से मुहब्बत करते हो तो मेरी इत्तेबाअ़ में आ जाओ, अल्लाह तुम से मुहब्बत करने लगेगा।

गोया अल्लाह तआ़ला ने वाज़ेह तौर पर फरमा दिया कि ऐ महबूब! आप फरमा दीजिये कि अगर तुम में से कोई अल्लाह की मुहब्बत और गुलामी का दावा करता है वो पहले मेरी मुहब्बत और गुलामी का पट्टा अपने गले में डाले, अगर वो ऐसा करेगा तो उसे अल्लाह की मुहब्बत नसीब हो जाएगी।

इस आयते करीमा से ये बात भी रोज़े रोशन की तरह साफ हो गई कि अल्लाह के नज़्दीक वो मुहब्बत और इताअ़त हरगिज़ मुअ़तबर और क़ाबिले क़बूल नहीं जो उसके रसूल ﷺ की मुहब्बत का दम भरे और उसकी इताअ़त बजा लाए बग़ैर हो। उसने अपने रसूल को अपने और अपने बन्दों के दरमियान वास्ता बना दिया और ये बात तय कर दी कि इस वास्ता को दरमियान से निकाल कर इताअ़त व मुहब्बते इलाही का दावा किसी तौर पर भी मबनी बर

हक़ीक़त क़रार नहीं दिया जा सकता। मज़ीद इरशाद फरमाया :

وَ إِذَا سَأَلَکَ عِبَادِیْ عَنِّی فَإِنِّیْ قَرِیْبٌ ؕ

(البقرة،٢:١٨٦)

तर्जमा : और (ऐ महबूब ﷺ) जब आप से मेरे बन्दे मेरे मुतअ़ल्लिक़ सवाल करें (तो फरमा दें) पस मैं क़रीब हूँ।

यानी ऐ मेरे महबूब! जब मेरे मुतलाशी बन्दे आप से मेरे बारे में सवाल करें तो आप उन्हें कह दीजिये कि मैं उनके बहुत क़रीब हूँ। इस आयते मुबारका में कहा जा रहा है कि मैं उन बन्दों के क़रीब हूँ। मगर सवाल ये पैदा होता है कि वो बन्दे कौन हैं जिन्हें क़ुर्बे इलाही का मुज़्दए जांफज़ा सुनाया जा रहा है! ज़रा ग़ौर करें तो ये नुक्ता खुल जाएगा कि मेरे बन्दे वो हैं जो पहले मेरे मुस्तफा ﷺ के दर के सवाली बनें। जो उनके दर का सवाली होगा, वही मेरा बन्दा होगा। और जो उस दर का सवाली न होगा, वो मेरे दर का सवाली नहीं और वो कभी शाने बन्दगी का हामिल नहीं हो सकता। इसी सियाक़ में इमाम अहमद रज़ा رحمۃ اللہ علیہ ने क्या ख़ूब कहा है :

बख़ुदा ख़ुदा का यही दर, नहीं और कोई मफर मक़र ।
जो वहां से हो, यहीं आके हो, जो यहाँ नहीं, वो वहां नहीं।।

ख़ुदा की बन्दगी के लिये वास्तए रिसालत की नागुज़ीरियत

अल्लाह तआ़ला और उसके बन्दों के दरमियान रिसालत एक ऐसा वास्ता है जिस से इताअ़त व मुहब्बते इलाही के बाब में सर्फे नज़र नहीं किया जा सकता। इसलिए जब मुनाफिक़ीन ने अज़ रूए बुग़्ज़ो इनाद दरे मुस्तफा ﷺ पर सरे तस्लीम ख़म करने से इन्कार कर दिया तो अल्लाह तआ़ला ने ये इरशाद फरमाकर उन की क़लई खोल दी :

وَ إِذَا قِیْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا إِلٰی مَا أَنْزَلَ اللهُ وَ إِلَی الرَّسُوْلِ
رَأَیْتَ الْمُنَافِقِیْنَ یَصُدُّوْنَ عَنْکَ صُدُوْدًاo

(النساء،٤:٦١)

तर्जमा : और जब उन से कहा जाता है कि आओ, उस चीज़ की तरफ जो अल्लाह ने नाज़िल किया है और रसूल की तरफ तो आप देखेंगे कि मुनाफिक़ आप ﷺ से मुंह मोड़कर फिर जाते हैं।

मुलाहिज़ा हो कि ये मुनाफिक़ लोग अल्लाह की तरफ आने से पसो पेश नहीं करेंगे और उन्हें किसी क़िस्म की हिचकिचाहट और घबराहट नहीं होगी, मगर जब रसूले अकरम ﷺ की तरफ बुलाया जाता है तो वो अपना चेहरा ये कह कर फेर लेते हैं कि जब आख़िरकार अल्लाह ही की तरफ जाना है तो सीधे उसकी तरफ क्यों न जाएं .... रसूल ﷺ की तरफ क्यों जाएं? अल्लाह तआ़ला ने उन लोगों के बारे में जिन के दिलों के अन्दर चोर है दो टूक ऐलान कर दिया कि मेरे बन्दे नहीं बल्कि मुनाफिक़ हैं। मेरा उन से निस्बते बन्दगी के नाते कोई तअ़ल्लुक़ नहीं।

ये बात मुहव्वला बाला इरशादे रब्बानी से तय हो गई कि अल्लाह तआ़ला के रसूल ﷺ की राह पर चले बग़ैर कोई अपनी मंज़िल नहीं पा सकता। वो

लाख टक्करें मारता रहे, उसकी बन्दगी को बारगाहे ख़ुदावन्दी में सनदे क़बूलियत नहीं मिल सकती। बक़ौले सअ़दी शीराज़ी رحمۃ اللہ علیہ :

ख़िलाफे पैग़म्बर कसे रह गुज़ीद।
हरगिज़ नख़्वाहद बमंज़िल रसीद।।

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त चाहता तो अपना पैग़ाम बराहे रास्त अपने बन्दों तक पहुँचाने का इन्तेज़ाम कर सकता लेकिन उसके बावजूद उसने अपने और बन्दों के दरमियान रिसालत का वास्ता रखा। उस की क़ुदरते कामिला के सामने कोई चीज़ मुहाल नहीं, वो अपने फरिश्तों से ये काम ले सकता था। ऐन मुमकिन था कि हर शख़्स जब सुबह बेदार होता तो उसके सिरहाने एक सिपारा पड़ा होता जिस पर दर्ज हिदायते रब्बानी उस के दिल में उतर जाती। वो कलाम जो उसने अपने चुनिंदा व बरगुज़ीदा अम्बिया व रुसुल के साथ किया, वो अपने हर बन्दे के साथ भी कर सकता था, इस तरह हर बन्दे का तअ़ल्लुक़ बराहे रास्त उस से क़ायम हो जाता। लेकिन अपनी बेपायां हिकमतों के पेशे नज़र अल्लाह तआ़ला ने इस बात का फैसला कर दिया कि मेरी हिदायत मेरे रसूल ﷺ के वास्ते के बग़ैर मुमकिन नहीं और मेरी मअ़रफत को वही पा सकता है जिसे मेरे रसूल ﷺ की मअ़रफत हासिल हो जाए।

मुहरे अंगुशतरिए रसूल ﷺ में नामों की तरतीब

ताजदारे कायनात ﷺ के पास एक अंगूठी थी, जिस पर "مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللهِ" के अल्फाज़ कुन्दा थे। आप उस से मुहर लगाया करते थे। (सहीहुल बुख़ारी :1, 15) हुक्मरानाने वक़्त को ख़ुतूत भिजवाते वक़्त उन पर ये मुहर लगवाई जाती थी। आजकल ये ख़ुतूत छप चुके हैं और उन्हें हर कोई देख सकता है।

अ़रबी हमेशा दाएं से बांए लिखी जाती है, मगर ये बात ग़ौर तलब है कि अंगूठी मुबारक की मुहर में ये तरतीब नीचे से ऊपर की तरफ चली गई है और वो यूं कि "محمد" नीचे "رسول" दरमियान में "الله" सब से ऊपर लिखा गया है। ये तरतीब महज़ कोई इत्तेफाक़ी अम्र नहीं बल्कि इस का मक़सद लोगों को ये समझाना था कि अगर तुम अल्लाह का क़ुर्ब हासिल करने की तमन्ना रखते हो तो उस का रास्ता मुहम्मद ﷺ की गुलामी और इत्तेबाअ़ में मुज़मर है। ये तरतीबे स्वऊदी इस बात का मज़हर है कि अल्लाह तआ़ला तक रसाई हासिल करने के लिये मुस्तफा ﷺ की दहलीज़ पर सरे तस्लीम ख़म करना लाज़मी व ज़रूरी अम्र है। हमारे सफर की इन्तेहा ताजदारे कायनात ﷺ की ज़ाते सतूदा सिफात तक रसाई है, बाक़ी रहा अल्लाह से मिलाना तो ये उन का काम है। किसी ने क्या ख़ूब कहा है :

तेरी मेअ़राज कि तू लौहो क़लम तक पहुँचा।
मेरी मेअ़राज कि मैं तेरे क़दम तक पहुँचा।।

दरे मुस्तफा صلى الله عليه وآله وسلم पर तक़्सीमे फुयूज़ाते इलाहिया

ये बात तय हो गई कि बारगाहे मुस्तफवी صلى الله عليه وآله وسلم में शर्फे हुज़ूरी हासिल करने वाले को ही फैज़ाने रिसालत صلى الله عليه وآله وسلم नसीब होगा। ये बात अच्छी तरह ज़हन नशीं कर लेनी चाहिये कि फैज़ाने रिसालत ही मअ़रफते इलाही के हुसूल का पेश ख़ेमा है। वास्तए रिसालत ही वो ज़ीना है जो सीधा अर्शे इलाही तक जाता है। अगर कोई इस वास्ते को दरमियान से हटाना चाहे तो उस का ये अ़मल अल्लाह के निज़ाम को मन्सूख़ करने की सईए मौहूम के मुतरादिफ होगा। इस हक़ीक़त पर हुज़ूर नबीए करीम صلى الله عليه وآله وسلم का ये इरशादे मुबारक दलालत करता है :

إِنَّمَا أَنَا قَاسِمٌ وَ اللهُ يُعْطِىْ-

तर्जमा : मैं (नेअ़मतों की) तक़्सीम करने वाला हूँ और अ़ता करने वाला अल्लाह है।

(सहीहुल बुख़ारी, किताबुल इल्म : 1: 16)
(अस्सहीह मुस्लिम, किताबुज़्ज़कात : 1 : 333)
(मुसनदे अहमद बिन हम्बल : 2 : 234)
(अल मुअ़जमुल कबीर, 19: 284, रक़्म : 755)
(शरहुस्सुन्ना, 1: 284, रक़्म 131)

इस हदीसे मुबारका में आप صلى الله عليه وآله وسلم ने अ़ताए नेअ़म के मालिक अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त का ज़िक्र बाद में और उन नेअ़मतों की तक़्सीम के हवाले से अपना ज़िक्र पहले किया है। गोया यूं फरमाया कि : ऐ लोगों! कहाँ भटके जा रहे हो! क़ासिम मैं ही हूँ। अगर तुम्हें ख़ैरात व फुयूज़ाते इलाहिया चाहिए तो तुम्हें मेरे दरवाज़े पर आना होगा। अगर मुझ से भागोगे तो दर बदर की ठोकरें खाना तुम्हारा नसीब होगा और तुम्हें ज़िल्लत व रुसवाई की ख़ाक फांकने के सिवा और कुछ हासिल नहीं होगा। फुयूज़ाते इलाहिया की ख़ैरात सिर्फ इसी दर से मिल सकती है, इसलिए आओ और मेरी दहलीज़ पर झुक जाओ।

किसी ने क्या ख़ूब कहा है :

मुहम्मदे अ़रबी कि आबरूए हर दो सरा अस्त।
कसे कि ख़ाके दरश नीस्त ख़ाक बर सरे ऊ।।

सिलसिलए औलिया का इजरा

बाबे नबुव्वत हमेशा के लिये बन्द हो जाने के बाद फुयूज़ाते इलाहिया की तरसील व इजरा के निज़ाम को जारी व सारी रखने के लिये अल्लाह तआ़ला ने अपने महबूब व मुक़र्रब औलियाए किराम का सिलसिला जारी फरमा दिया। ये औलियाए किराम दरे मुस्तफा صلى الله عليه وآله وسلم की ख़ैरात आ़म लोगों में तक़्सीम करने और उन्हें अल्लाह की बारगाह का रास्ता दिखाने पर मुतअ़य्यन हैं। उन से फैज़ हासिल करना हुक्मे रब्बानी की तामील है। क़ुरआने मजीद में हुक्मे रब्बानी है

وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدَاةِ وَ الْعَشِىِّ يُرِيْدُوْنَ وَجْهَهٗ وَ لَا تَعْدُ عَيْنَاكَ عَنْهُمْ-

(الكهف، ١٨:٢٨)

तर्जमा : (ऐ मेरे बन्दे) तू अपने आप को उन लोगों की संगत में जमाए रखा कर जो सुब्हो शाम अपने रब को याद करते हैं, उस की रज़ा के तलबगार रहते हैं (उसके दीदार के मुतमन्नी और उसका मुखड़ा तकने के आरज़ूमन्द रहते हैं) तेरी (मुहब्बत और तवज्जोह की) निगाहें उन से न हटें।

इस आयते करीमा में अल्लाह तआ़ला ने अपने बन्दों को अपनी बारगाह तक रसाई का तरीक़ा बताते हुए फरमाया : "ऐ लोगों! तुम मेरे उन बन्दों से

अपना नाता जोड़ लो जो सुब्हो शाम मेरी याद में मस्त रहते हैं और जो मेरे चमनिस्ताने अलस्त से जाम पर जाम लुन्ढाते हैं और मेरे ज़िक्र में उनके रात दिन आ़लमे सरशारी में बसर होते हैं।"

अब जिन्हें मेरी कुर्बत दरकार हो उनके लिये ज़रूरी है कि मेरे इन ख़ुदा मस्त बन्दों की सोहबत और संगत इख़्तियार कर लें और उन बादा कशों की मए सरमदी की महफिल में आ जाएं ताकि उन्हें भी उस सरवर व निशात आगीं शराब के चन्द घूंट मयस्सर आ जाएं। अगर वो नहीं तो फक़त उस की ख़ुश्बू से जो सरशारी नसीब होगी वो भी कम नहीं।

गिर्दे मस्तां गर्द, गर मए कम रसद बूए रसद।
बूए ऊ गर कम रसद, रूयते ईशां बस अस्त।।

फिर इरशाद फरमाया : "وَ لَا تَعْدُ عَيْنٰكَ عَنْهُمْ" यानी ऐ पिन्दारे दुनियवी में मस्त रहने वाले लोगो! मेरे इन बन्दों से अपनी निगाहें न हटाना और उन्हें कभी बनज़रे तहक़ीर न देखना वरना अल्लाह तुम से अपनी निगाहें हटा लेगा और तुम्हारा नामो निशान भी बाक़ी न रहेगा। फिर फरमाया :

"تُرِيْدُ زِيْنَةَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا"

क्या तुम इस चन्द रोज़ा दुनिया की ज़ैबो ज़ीनत के असीर रहना चाहते हो और आख़िरत की नेअ़मतों की तलब से बेगाना रह कर ज़िन्दगी गुज़ारने के तमन्नाई हो? ख़बरदार! अगर उख़रवी नेअ़मतों के तलबगार हो तो मेरे बन्दों को अपना मर्कज़े निगाह बना लो। अगर तुम आरज़ी मताए हयात से सर्फे नज़र करके उनके ख़ोशाचीं बन जाओगे तो वो तुम्हें तालिबाने मौला और तालिबाने आख़िरत बना देंगे और अगर उन्हें तकना छोड़ दोगे और उन से नज़रें हटा लोगे तो फिर मकरूहाते दुनिया में ग़र्क़ होकर रह जाओगे और दुनिया की मुहब्बत

तुम्हें ज़िक्रे इलाही और यादे आख़िरत से बेगाना कर देगी। फिर इरशाद हुआ :

وَ لَا تُطِعْ مَنْ أَغْفَلْنَا قَلْبَهُ عَنْ ذِكْرِنَا۔
(الکہف،١٨:٢٨)

तर्जमा : और तू उस शख़्स की इताअ़त भी न कर जिस के दिल को हम न अपने ज़िक्र से ग़ाफिल कर दिया।

ख़बरदार! उन लोगों की इताअ़त न करना जिन के दिलों को हमने अपने ज़िक्र से ग़ाफिल कर दिया है, अगर तुम उन का कहना मानोगे और उनके पीछे चलोगे तो हम से दूर होकर خُسْرَانٌ فِى الدُّنْيَا وَ الْاٰخِرَة यानी दुनिया और आख़िरत की हलाकत के मुस्तहिक़ बन जाओगे।

इस आयते करीमा से ये सबक़ मिलता है कि मअ़रफत व कुर्बे इलाही और विसाल बिल्लाह के लिये अल्लाह का हुक्म है कि उस के उन नेक बन्दों से यक गुना क़ल्बी तअ़ल्लुक़, सोहबत और मइय्यत इख़्तियार की जाए जो फुयूज़ाते नबवी हासिल करने का वसीला हैं पस मज़कूरा बाला बहस से ये साबित हुआ कि जिस तरह नबी की ज़ात उलूही फुयूज़ात हासिल करने का ज़रिया होती है, उसी तरह गिरोहे औलिया भी फुयूज़ाते नबवी हासिल करने का ज़रिया व वसीला है।

साइंस और सिलसिलए रूहानियत में आपसी रब्तो तअल्लुक़

जैसा कि हम शुरू में ये ज़िक्र कर चुके हैं कि मज़हब (इस्लाम) और साइंस के दरमियान किसी क़िस्म की मुग़ायरत नहीं है। वो दिन दूर नहीं जब साइंसी इन्केशाफात व तहक़ीक़ात कुल्ली तौर पर इस्लाम की बुनियादी सदाक़तों की आईनादार होंगी। लेकिन इस नहज पर मुसलमान अहले इल्म और माहिरीने साइंस को अभी बहुत सा काम करना है। दौरे जदीद में इस्लाम की हक़्क़ानियत व सदाक़त को उलूमे जदीदा और साइंस के इस्तिदलाल से साबित करना वक़्त का अहम तक़ाज़ा है, जिस से ज़्यादा देर तक सर्फे नज़र नहीं किया जा सकता। आज दीनी तालीमात से बेबहरा और ख़ाम ज़हन ये सवाल करता है कि ये कैसे मुमकिन है कि मदीना मुनव्वरा हम से हज़ारों किलोमीटर की दूरी पर है, वहां से फेज़ रसानी का सिलसिला जारी है? और ये कि औलिया को ये फेज़ बारगाहे रिसालत से मिलता है और वो उसे हम तक पहुँचाने का ज़रिया बनते हैं? इस की तौजीह कैसे की जा सकती है? ये सलासिले तरीक़त और ये नस्ल दर नस्ल फैज़ाने विलायत की तरसील और मुन्तकिली किस तरह मुमकिन है? ये और इस तरह के बेशुमार दीगर सवालात ज़हने इन्सानी में करवट लेते रहते हैं।

आज के तरक़्क़ी याफ्ता इन्सान के पास "हक़ीक़त" के इदराक के लिये साइंसी तरीक़े कार एक ऐसा मुअतबर व मुस्तनद ज़रिया है जो अक़्ली इस्तिदलाल और मुशाहिदाए हक़ाइक़ की बुनियाद पर कोई नज़रिया क़ायम करता और नतीजे अख़ज़ करता है, जिन्हें मुसलसल तजुर्बे की कसौटी पर परखा जाता है। साइंस का मुतालआ मअरूज़ी हालात को सामने रखकर किया जाता है। साइंस और मज़हब की हुदूद और दाइराए कार बिल्कुल जुदा

जुदा हैं। साइंस सिर्फ आलमे असबाब का इहाता हरने का दावा करती है और उसे आलमे असबाब के अलावा किसी और शय से सरोकार नहीं, जबकि मज़हब मा बअद तबियाती हक़ाइक़ और उख़रवी ज़िन्दगी जैसे उमूर को ज़ेरे बहस लाता है। चूंकि इन दोनों का दायरए कार क़तई मुख़्तलिफ है, लिहाज़ा साइंस और मज़हब में कभी भी किसी क़िस्म का कोई आपसी टकराव और इख़्तिलाफ मुमकिन नहीं। दूसरी तरफ जदीद साइंस के बारे में एक बात निहायत यक़ीन से कही जा सकती है कि साइंस के मैदान में होने वाली हर पेशे रफ्त इस हक़ीक़त को बेनक़ाब करती नज़र आती है कि इस कायनात की बुनियाद माद्दी नहीं बल्कि रूहानी है। जदीद साइंस एटमी तवानाई की दरयाफ्त के बाद एक बहुत बड़े सर बस्ता राज़ से पर्दा उठा चुकी है। वो ये कि कायनात के हर नन्हे ज़र्रे के अन्दर तवानाई का एक बेश बहा ख़ज़ाना छुपा हुआ है जिस से कायनात में मुहय्यरुल उक़ूल कारनामे सर अंजाम दिये जा सकते हैं। आइन्सटाइन के नज़रियए इज़ाफियत की मसावात $E= mc^2$ की गुत्थियां सुलझाने के बाद अब साइंस पर फितरत का ये राज़ बेनक़ाब हो चुका है कि माद्दे को पूरी तरह तवानाई में बदलना मुमकिन है। यूं ये बात यक़ीन के साथ कही जा सकती है कि साइंस और मज़हब में कोई इख़्तिलाफ नहीं और ये कहना कि दोनों में निबाह नहीं हो सकता ख़ुद दक़यानूसी सोच और ख़ाम ख़्याली है। एक बात बिल्कुल वाज़ेह है कि जहां साइंस पूरी तौर पर माद्दी ज़िन्दगी के मज़ाहिर से मुतअल्लिक़ है और उसे रूहानी ज़िन्दगी से कोई सरोकार नहीं, वहां मज़हब अव्वल ता आख़िर रूहानी ज़िन्दगी से बहस करता है और उस का इतलाक़ माद्दी ज़िन्दगी पर करके इन्सान की दुन्यवी व उख़रवी ज़िन्दगी को बेहतर बनाने की कामिल सलाहियत रखता है।

साइंस.... दौरे हाज़िर का सबसे बड़ा मअ़्यारे इल्म

आज का दौर माद्दी तरक़्क़ी के उरूज का दौर है। साइंस इस माद्दी दुनिया का सब से बड़ा इल्मी मअ़्यार है। इस दौर में हर बात को साइंसी पैमाने पर परखा और जांचा जाता है। फक़त उसी चीज़ को हक़ माना जाता है जो साइंसी पैमानों पर कमा हक़्क़ाहू पूरा उतर रही हो और जो चीज़ साइंसी कसौटी पर पूरा न उतरे उसे सिर्फ तसव्वुर व तख़य्युल और तवहहुमात परस्ती तसव्वुर करते हुए रद्द कर दिया जाता है, जबकि जदीद साइंसी तहक़ीक़ात की बदौलत इस्लामी तालीमात की रोज़ अफज़ूं ताईद व तौसीक़ मयस्सर आ रही है। (इस मौजूअ़ पर तफ्सीली मालूमात के लिये राक़िम की किताब Quran on creation & Expantion of the universe का मुतालआ़ ना गुज़ीर है।)

बद क़िस्मती से उम्मते मुस्लिमा बिल उमूम माद्दा परस्ती के चुंगल में फंस कर रूहानी ज़िन्दगी से दूर हटती चली जा रही है। इस्लाम को भी माद्दा परस्ती का लिबादा पहनाया जा रहा है। आज का तालीम याफ्ता नौजवान तब्क़ा बिल उमूम माद्दियत ज़दगी, फिक्री इफलास, इब्हाम और तशकीक का शिकार है। उस की नज़र में वही चीज़ दुरुस्त और मब्नी बर हक़ है जिसे साइंस तस्लीम करे। कम इल्मी और बुनियादी इस्लामी तालीमात से नावाक़फियत की बिना पर वो मज़हबी अ़क़ाइद को भी ढकोसला समझता है। जदीद तालीम याफ्ता लोगों में ये तसव्वुर पाया जाता है कि औलिया अल्लाह की पैरवी करना या उनके अ़ज़ीम रूहानी सिलसिलों और उर्सों की बात करना, पुराने ज़माने की रिवायात और जहालत की बातें हैं। दौरे जदीद में इन बातों की कोई अहमियत नहीं रही। जबकि हक़ीक़त में ये बात कहने वाले ख़ुद पर दौरे जदीद के इल्म से पूरी तौर पर अन्जान हैं क्योंकि हम ये देखते हैं कि साइंस ख़ुद रफ्ता रफ्ता हुज़ूर ﷺ के मोअ़्जज़ात और औलिया अल्लाह की करामात को सच्चा साबित करती चली जा रही है। अब हम कुछ साइंसी मिसालों के ज़रिये क़ुरआने मजीद के इस बुनियादी फलसफा और तालीम को आसान कर के

समझाने की कोशिश करेंगे ताकि दौरे जदीद का नौजवान ये न समझे कि ये मज़हबी लोग सिर्फ हिकायतें ही सुनाते रहते हैं जो पुराने लोगों की पुरानी बातें हैं।

हम यहाँ तफ्सील में जाए बग़ैर अपनी बहस के दायरए कार को ज़रूरी मालूमात बहम पहुँचाने तक महदूद रखेंगे।

ज़मीन की मिक़नातीसियत

क़ुरआनी तालीमात और जदीद साइंस के तनाज़ुर में सबसे पहले हम मिक़नातीस (Magnet) के हवाले से बात करेंगे। माद्दी तरक़्क़ी के इस दौर में मिक़नातीस पर बहुत काम हो रहा है। यूरोप और अमरीका में इस पर सेमिनार मुन्अ़क़िद किये जा रहे हैं। इस ज़िम्न में Super Electro Magnetism के हवाले से साइंसी तहक़ीक़ आगे बढ़ रही है। मिक़नातीसियत वो क़ुव्वत है जिस से कोई मिक़नातीस अपने दायरए असर के अन्दर वाक़ेअ़ चीज़ों को अपनी तरफ खींचता है। हर मिक़नातीस में एक ख़ास मिक़नातीसी क़ुव्वत (Magnetic Force) होती है। जिस का असर एक ख़ास फासले (Range) तक होता है। जितना ताक़तवर कोई मिक़नातीस होगा उतना ज़्यादा फासले तक उस का दायरए असर होगा। इसे उस मिक़नातीस का हल्क़ए असर (Magnetic Field) कहते हैं। हमारी ज़मीन फी नफ्सेहि एक बड़ा मिक़नातीस है। जिस की मिक़नातीसी ताक़त का दायरए कार 80,000 किलोमीटर तक फैला हुआ है। इस के मुक़ाबले में मुश्तरी (Jupiter) जो निज़ामे शम्सी का सबसे बड़ा सितारा है, उसकी मिक़नातीसी ताक़त ज़मीन से भी ढाई लाख गुना ज़्यादा है। ये एक साइंसी हक़ीक़त है कि जो जिरमे फलकी (सितारा या सय्यारा) जितनी ज़्यादा कम्मियत पर मुश्तमिल होगा, उस का दायरए कशिश भी उसी क़दर वसीअ़ होगा।

रूहानी कायनात का मिक़्नातीसी निज़ाम

रूहानियत की हक़ीक़त को न समझ पाने वाले माद्दियत ज़दा लोग अक्सर ये सवाल करते हैं कि ये कैसे मुमकिन है कि अल्लाह का एक वली हज़ारों मील की दूरी से अपने मुर्शिद को अपनी तवज्जोह से फैज़याब कर दे ? इतनी दूर से ऐसा क्योंकर मुमकिन है? कम इल्मी के बाइस पैदा होने वाले इन शुकूक व शुब्हात का जवाब बिल्कुल सादा है कि वो क़दीरो अ़लीम ज़ात जिस ने ज़मीन और मुश्तरी जैसे सय्यारगाने फलक को वो मिक़्नातीसी (चुम्बकीय) कुव्वत अ़ता कर रखी है, जो हज़ारों लाखों मीलों के फासले पर ख़ला में उड़ते हुए किसी शहाबिये (Meteorite) पर असर अन्दाज़ होकर उसे अपनी तरफ खींचते हुए अपने ऊपर गिरने पर मजबूर कर सकती है, क्या वो क़ादिरे मुतलक़ ज़ात माद्दी हक़ीक़तों को रूहानी हक़ीक़तों से बदलने पर क़ादिर नहीं? इस हक़ीक़त का इदराक वही कर सकता है जिस का दिल बसीरते क़ल्बी और नूरे बातिनी से बहरावर हो।

हर साहिबे इल्म पर ये हक़ीक़त मुन्कशिफ है कि ज़मीन जो कि एक मिक़्नातीस है, उस की मिक़्नातीसी कुव्वत उस के क़ुत्बीन (Poles) से पैदा होती है, जो शिमाली और जुनूबी पोल (North & South Poles) कहलाते हैं। कशिशे सिक़्ल के इन असरात को कुतुबनुमा (Compass) की मिसाल से बख़ूबी समझा जा सकता है। उसे ज्यों ही ज़मीन पर रखा जाता है उसकी सूइयों का रुख़ शिमालन जुनूबन (उत्तर-दक्षिण) घूम जाता है। जब (Compass) के मुक़ाबले में आम सूईयां ज़मीन पर रखीं तो वो ज्यों की त्यों पड़ी रहती हैं और उन का रुख़ शिमालन जुनूबन (उत्तर-दक्षिण) नहीं फिरता। सवाल ये पैदा होता है कि Compass की सूई को शिमालन जुनूबन

किस क़ुव्वत ने फेरा? इस का जवाब ये है कि वो मिक़्नातीसी सूई जिस की निस्बत ज़मीनी कुतुब (Pole) के साथ हो गई वो आम सूई नहीं रही बल्कि कुतुबनुमा बन गई। इसी निस्बत के असर ने उसकी सिम्त क़ुत्बीन की तरफ फेर दी।

रूहानी क़ुतुबनुमाए आज़म...... मकीने गुम्बदे ख़िज़रा

माद्दियत ज़दा लोगों को जान लेना चहिये कि उनके दिल आम सूई की तरह हैं जो किसी रूहानी क़ुतुब से मुन्सलिक न होने की वजह से उस एज़दां अफरोज़ नूर से महरूम हैं। जिस के बारे में क़ुरआन ने لَا شَرْقِيَّةٍ وَ لَا غَرْبِيَّةٍ कहा। क्योंकि उस के नूर की हदें शरक़ व ग़रब (पूरब से पश्चिम) से मा वरा हैं। रूहानी कायनात का क़ुतुबे अज़ीम सिर्फ एक है और वो गुम्बदे ख़िज़रा में मुक़ीम है। ज़मीन के शिमाली, जुनूबी दो पोल हैं जिन की निस्बत से कुतुबनुमा सूई शिमालन व जुनूबन रुख़ इख़्तियार कर लेती है, जबकि फर्श से अ़र्श तक रूहानी कायनात का क़ुतुब गुम्बदे ख़िज़रा का मकीन है। जिस तरह आम सूईयों की निस्बत ज़मीन के क़ुत्बीन से हो जाए तो वो आ़म सूईयां नहीं रहतीं बल्कि ख़ास हो जाती हैं, जो ज़ाहिरी वास्ता के बग़ैर जहां भी हों ख़ुद बख़ुद अपनी सिमतें शिमालन जुनूबन दुरुस्त कर लेती हैं, बिल्कुल इसी तरह एक मोमिन का दिल भी हर आन मकीने गुम्बदे ख़िज़रा की तवज्जोहाते करम की तरफ माइल रहता है। जिन दिलों की निस्बत गुम्बदे ख़िज़रा से हो जाए वो आ़म नहीं रहते बल्कि ख़ास दिल बन जाते हैं, फिर वो किसी ज़ाहिरी वास्ते के बग़ैर बग़दाद हो या अजमेर, लाहौर हो या मुल्तान, जब उनकी निस्बते वजूदे मुस्तफा ﷺ से हो जाती है तो सिम्त ख़ुद बख़ुद मुतअ़य्यन हो जाती है। अगर ख़ुदा नख़्वास्ता ये सिलसिलए फैज़ टूट गया तो इस का मतलब है कि हमारे

दिल की सूई ख़राब है और उस का राब्ता अपने रूहानी कुतुब से कट गया है, क्योंकि ये फैज़ान तो हमेशा जारी रहने वाला है। इस वसीअ़ व अ़रीज़ माद्दी कायनात में अपने अपने मदारों में तैरने वाले तमाम तर सय्यारों और सितारों के हमेशा दो पोल होते हैं, जिन से उन की मिक़नातीसी लहरें निकलकर उन की फज़ा में बिखरती और बैरूनी अ़नासिर के लिये अपनी तरफ कशिश पैदा करती हैं, जबकि तहतुस्सरा से औजे सुरय्या तक फैली हुई इस सारी रूहानी कायनात का पोल फक़त एक ही है और वो हमारी ही ज़मीन पर वाक़ेअ़ सरज़मीने मदीना मुनव्वरा है। ये निज़ामे वहदत की कारफरमाई है कि जिस दिल की सूई मदीना के पोल से मरबूत (मिल) हो गई वो कभी भी बे सिम्त व बे रब्त नहीं रहेगा। आज भी ताजदारे कायनात ﷺ की मिक़नातीसी तवज्जोह हर साहिबे ईमान को उसी तरह सिम्त (Direction) दे रही है जैसे ज़मीनी मिक़नातीस के दोनों पोल किसी कुतुबनुमा की सूई को शिमाल व जुनूब की मसूस सिम्त देते हैं।

मिक़नातीस कैसे बनते हैं ?...... शैख़ और मुरीद में फर्क़

मिक़नातीस बनाने के दो तरीक़े हैं जिस से आ़म तौर पर लोहे को मिक़नाया जाता है :

1. मिक़नातीस बनाने का पहला तरीक़ा इलेक्ट्रिक चार्ज मैथड (Electric Charge Method) कहलाता है। इस तरीक़े की रू से लोहे के एक टुकड़े में बर्क़ी रौ (Electric Current) गुज़ारी जाती है। इसके नतीजे में जो मिक़नातीस बनते हैं उन्हें Electric Charge Magnets यानी बर्क़ी चार्ज किये गये मिक़नातीस कहते हैं।

ये मिक़नातीस इस आयते करीमा का मिस्दाक़ हैं जिस में अल्लाह तआ़ला का इरशाद है :

الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَ الْعَشِيِّ يُرِيْدُوْنَ وَجْهَهٗ۔
(الكهف،١٨:٢٨)

तर्जमा : जो लोग सुब्हो शाम अपने रब को याद करते हैं और उस की रज़ा के तलबगार रहते हैं।

अल्लाह तआ़ला ने उन बन्दों की ये कैफियत बयान फरमाई है कि वो सुब्हो शाम अपने मौला की याद में मस्त रहते हैं। उन में मेहनत, मुजाहिदा और तज़किया की बिजली गुज़ारी जाती है तो रूहानी तौर पर चार्ज हो जाते हैं। इस प्रोसेस से जो मिक़नातीस (Magnet) तैयार होते हैं उन में से किसी को दाता गंज बख़्श बना कर लाहौर में, किसी को ग़ौसे अअ़ज़म बनाकर बग़दाद शरीफ में, किसी को ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती बनाकर अजमेर शरीफ में और किसी को बहाउद्दीन ज़करिया बनाकर मुल्तान में फैज़ रसानी को जारी व सारी रखने के लिये मामूर कर दिया जाता है।

2. मिक़नातीस बनाने का दूसरा तरीक़ा स्ट्रॉक मैथड (Stroke Method) कहलाता है। इस के मुताबिक़ लोहे के टुकड़े को किसी मिक़नातीस के साथ रगड़ा जाता है तो उस में मिक़नातीसियत (Magnetism) मुन्तक़िल हो जाती है और लोहे का वो टुकड़ा भी इस रगड़ और मइय्यत से मिक़नातीस बन कर लोहे की आ़म चीज़ों को अपनी तरफ खींचने लग जाता है।

रूहानी मिक़नातीसियत की दुनिया में दूसरे तरीक़े के ज़िम्न में वो लोग आते हैं जो मुजाहिदए नफ़्स, मेहनत और तज़किया व तसफिया के ऐतबार से

कमज़ोर होते हैं और वो इस क़दर रियाज़त नहीं कर सकते मगर उनके अन्दर ये तड़प ज़रूर होती है कि वो भी अपने क़ल्बो बातिन को कसाफत और रज़ाइल से पाक व साफ करके रज़ाए इलाही से हमकिनार हों।

وَاصْبِرْ نَفْسَکَ مَعَ الَّذِيْنَ......

(الکہف،۱۸:۲۸)

तर्जमा : तू अपने आप को उन लोगों की संगत में जमाए रख ....।

इस आयते मुबारका में उन तालिबाने हक़ का ज़िक्र किया गया है जो अल्लाह वालों की मुहब्बत और मइय्यत इख़्तियार करके अपने अन्दर लिल्लाहियत, हक़ परस्ती और ख़ुदा परस्ती का जौहर पैदा कर लेते हैं। स्ट्रॉक मैथड वाले "وَاصْبِرْ نَفْسَکَ" के मिस्दाक़ होते हैं। मुरीद दूसरे तरीक़े (Stroke Method) से रूहानी मिक़नातीसियत लेता है और शैख़ पहले तरीक़े (Electric Charge Method) से मिक़नातीस बनता है।

ईसाले हरारत और ईसाले रूहानियत

स्ट्रॉक मैथड की मिसाल ईसाले मिक़नातीसियत के ज़िम्न में ईसाले हरारत की सी है, जैसे किसी मूसिल शय को आग में तपाया जाए तो वो ख़ुद भी गर्म हो जाती है और अपनी हरारत को आगे भी मुन्तक़िल करती है। मिसाल के तौर पर लोहा एक अच्छा मूसिल होने के नाते हरारत के ईसाल की ख़ासियत रखता है जबकि लकड़ी ग़ैर मूसिल है जो आग में जल कर राख तो हो जाती है मगर ईसाले हरारत की सिफत से महरूम है। जब तक उसे हरारत मिलती रहे ईसाल का अ़मल जारी रखता है, बिल्कुल उसी तरह वो औलियाए

किराम जो फैज़ाने नबुव्वत से बहरायाब होते हैं, वो इस फैज़ान को आगे आ़म लोगों तक मुन्तक़िल करते रहते हैं। फैज़ाने नबुव्वत के मुन्तक़िल करने में इस तरीक़े कार को रूहानी दुनिया में सिलसिला कहते हैं और ये सिलसिला उन औलियाए किराम से चलता है जो गुम्बदे ख़िज़्रा के मकीं से रूहानियत का Magnetism लेते और आगे तक़सीम करते रहते हैं और उन से जारी होने वाला चश्मए फैज़ कभी ख़ुश्क नहीं होता।

जदीद साइंसी दरयाफ्त और निज़ामे बर्क़ियात से एक तम्सील

मौजूदा साइंसी दुनिया में बहुत सी चीज़े सुपर इलेक्ट्रो मैथड (Super Electro Method) के निज़ाम के तहत चल रही है, जिस के तहत कोइल (Coil) पर इतनी तवज्जोह और मेहनत की जाती है कि हर मुमकिन हद तक उस की सारी बर्क़ी मुज़ाहमत (Electrical Resistance) ख़त्म कर दी जाती है। सूफिया की ज़बान में इसे तज़किया कहते हैं। जिस के बारे में क़ुरआने पाक ने फरमाया :

قَدْ أَفْلَحَ مَنْ تَزَكّٰيo

(الاعلیٰ،۸۷:۱۴)

तर्जमा : बेशक वही बामुराद हुवा जो (नफ़्स की आफतों और गुनाहों की आलूदगियों से) पाक हो गया।

तज़किया क्या है ?

बर्क़ियात की इस्तिलाह में :

ये बिजली से चार्ज करने के ख़िलाफ तमाम मुमकिन मुज़ाहिमत को ख़त्म करता है।

सूफिया की इस्तिलाह में :

ये नफ़्स की कदूरतों, रज़ाइल और उस मुज़ाहमत को दूर करना है जो कुर्बे इलाही की राह में हाइल होती है।

बर्क़ियात के हवाले से होने वाली जदीद साइंसी पेशे रफ्त में किसी भी कोइल (Coil) को इस क़दर ठण्डा किया जाता है कि उस का दरजए हरारत −269 डिग्री सेन्टी ग्रेड पर चला जाता है। इस तरह जो इलेक्ट्रो मेगनेट (Electro Magnet) हासिल होता है, वो ज़्यादा से ज़्यादा करन्ट अपने अन्दर समा सकता है। वाज़ेह रहे कि हमारी ज़मीन का औसत दर्जए हरारत महज़ 15 डिग्री सेन्टी ग्रेड जबकि पूरी कायनात का दर्जए हरारत −270 डिग्री सेन्टी ग्रेड है।

इसी तम्सील पर सूफियाए किराम मुजाहिदा व मुहासबए नफ़्स के ज़रिये अपने अन्दर से गुस्सा, हसद, बुग्ज़, गुरूर, तकब्बुर और नफ़्स की दीगर जुम्ला कसाफतों को जो हुसूले फैज़ की राह में मानेअ़ होती हैं, अपने नफ़्स को ख़ूब ठण्डा करके बिल्कुल निकाल देते हैं ताकि वो सरापा यूं नज़र आने लगते हैं :

وَ الْكَاظِمِيْنَ الْغَيْظَ وَ الْعَافِيْنَ عَنِ النَّاسِ وَ اللهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَo

(آل عمران،۳:۱۳۴)

तर्जमा : और गुस्सा ज़ब्त करने वाले हैं और लोगों से (उन ग़लतियों पर) दरगुज़र करने वाले हैं और अल्लाह एहसान करने वालों से मुहब्बत फरमाता है।

जिस तरह Super Electro Magnet माद्दी कसाफतों के दूर होने से चार्ज होता है और उस से माद्दी दुनिया में करामतें सादिर होने लगती हैं, बिल्कुल इसी तरह औलिया का नफ़्स कसाफतों और रज़ाइल व कदूरत से पाक होकर फैज़ाने उलूहियत और फैज़ाने रिसालत को अपने अन्दर जज़्ब कर लेने के क़ाबिल बन जाता है और फिर वो जिधर निगाह उठाते हैं करामात का ज़हूर होने लगता है। इस क़ल्बे माहियत से औलिया के दिल मूसिल मिक़नातीस (Conducting Magnet) बन जाते हैं।

जब उस इलेक्ट्रो मेगनेट (Electro Magnet) को एक ख़ास प्रोसेस से गुज़ारा जाता है तो वो Super Conducting Magnet बन जाता है। इसे एन एम आर यानी Nuclear Magnetic Resonant के प्रोसेस से गुज़ारते हैं। मरीज़ को जब उसके सामने रख दिया जाता है तो उसके बदन के अन्दर की तमाम चीज़ों से पर्दे उठ जाते हैं। गोया जिस्म का पर्दा तो क़ायम रहता है मगर मिक़नातीसियत की वजह से Scanner के ज़रिये वो चीज़ें जो नंगी आँख नहीं देख सकती सब आशकार कर दी जाती हैं।

सो वो लोग जिन्होंने तज़किया व तसफिया की राह इख़्तियार की, उन पर से बसूरते कश्फ पर्दे उठा दिये जाते हैं। वो कश्फ से तवज्जोह करते हैं तो हज़ारों मील तक उन की निगाह काम करती है और वो चीज़ें जो मग़ीबात में से हैं और आ़म तौर पर नंगी आँख पर ज़ाहिर नहीं होतीं, उन पर आशकार कर दी जाती है।

रूहानी मिक़्नातीसियत के कमालात

ये तज़्किया व तसफिया के तरीक़ से हासिल होने वाली उसी रूहानी मिक़्नातीसियत का कमाल था कि ताजदारे कायनात ﷺ की सोहबते जलीला में तरबियत पाने वाले सहाबाए किराम माद्दी ज़राए इख़्तियार किये बग़ैर हज़ारों मील की मसाफत पर मौजूदा सिपहसालार लश्करे इस्लाम को हिदायात देने पर क़ादिर थे। सय्यदना सारिया बिन जुबल ؓ की ज़ेरे क़यादत इस्लामी लश्कर दुश्मनाने इस्लाम के ख़िलाफ सफ आरा था। दुश्मन ने ऐसा पैंतरा बदला कि इस्लामी अफवाज बुरी तरह से उस के निरग़े में आ गईं। उस वक़्त मुसलमानों के दूसरे ख़लीफा सय्यदना उमर फारूक़ ؓ मदीना मुनव्वरा में बर सरे मिम्बर ख़ुत्बए जुम्आ इरशाद फरमा रहे थे। आप की रूहानी तवज्जोह की बदौलत मैदाने जंग का नक़्शा आप की नज़रों के सामने था। दौराने ख़ुत्बा बआवाज़े बुलन्द पुकारे :

يَا سَارِىَ الْجَبَل۔

तर्जमा : ऐ सारिया ! पहाड़ की ओट ले।

(मिशकातुल मसाबीह : 546)

ये इरशाद फरमाकर आप दोबारा उसी तरह ख़ुत्बा में मशग़ूल हो गए, न आप के पास राडार था और न ही टी वी का कोई डायरेक्ट चैनल, हज़ारों मील की दूरी पर वाक़ेअ़ मस्जिदे नबवी में ख़ुत्बए जुम्आ भी दे रहे हैं और अपने सिपहसालार को मैदाने जंग में बराहे रास्त हिदायात भी जारी फरमा रहे हैं। न उनके पास वायरलेस सेट था, न मोबाइल फोन.....कि जिस से मैदाने जंग के हालात से फौरी आगही मुमकिन होती। ये रूहानी मिक़्नातीसी कुव्वत थी, अन्दर की आँख सब कुछ देख रही थी। हज़रत सारिया बिन जुबल ؓ ने

सय्यदना फारूक़े आज़म ؓ का पैग़ाम मौसूल किया और उस पर अ़मल दर आमद करते हुए पहाड़ की ओट लेकर फतह पाई। दुश्मन का हमला नाकाम रहा और लश्करे इस्लाम के जवाबी हमले से फतह ने उनके क़दम चूमे।

फैज़ाने नबवी और फैज़ाने सहाबा की ख़ोशा चीनी की बदौलत औलिया अल्लाह इबादत, ज़ुहदो वरअ़, इत्तिबाए़ सुन्नत, तक़्वा व तहारत, पाबन्दिए शरीअ़त, अहकामे तरीक़त की पैरवी और अल्लाह तआ़ला के हुक्म की तामील के ज़रिये अपने क़ल्बो बातिन का तज़्किया व तसफिया करके ज़िन्दगी सरवरे अम्बिया ﷺ के इश्क़ो मुहब्बत और इत्तिबाअ़ में गुज़ार कर अपने अन्दर "रूहानी मिक़्नातीसियत" पैदा कर लेते हैं।

माद्दी तरक़्क़ी की इस साइंसी दुनिया में जहां ग्लोबल विलेज का इन्सानी तसव्वुर हक़ीक़त का रूप धार रहा है, कम्प्यूटर की दुनिया में फासले सिमट कर रह गये हैं, इन्टरनेट ने पूरी दुनिया को राई के दाने में समेट लिया है। आज साइंसी तरक़्क़ी का ये आ़लम है कि मौजूदा दौर का आ़म आदमी भी अपनी हथेली पर मौजूद राई के दाने की तरह तमाम दुनिया का मुशाहिदा करने पर क़ादिर है। ये माद्दी तरक़्क़ी का एज़ाज़ है, जिस ने हमें आलात की मदद से इस औजे सुरय्या तक ला पहुँचाया है, लेकिन कुर्बान जाएं सरवरे आ़लम ﷺ के गुलामों के तसर्रुफात पर जो फक़त अपनी रूहानी तरक़्क़ी और कमालात की बदौलत इस मंज़िल को पा चुके हैं। सरकार ग़ौसे आज़म सय्यिदुना अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رحمة الله عليه फरमाते हैं :

نَظَرْتُ إِلٰى بِلَادِ اللهِ جَمْعًا
كَخَرْدَلَةٍ عَلٰى حُكْمِ التَّصَالِىْ

तर्जमा : मैं अल्लाह के तमाम मुल्कों को एक साथ इस तरह देखता हूँ जैसे मेरी हथेली पर राई का एक मामूली दाना (मेरी नज़र में होता है)।

तज़्किया और रियाज़त से हयात बख़्शी तक

मज़ीद बर आं मिक़्नातीस (Magnet) एक प्रोसेस के ज़रिये इस क़ाबिल बन जाते हैं कि उन से बिजली पैदा होने लगती है, जो हरारत और रोशनी पैदा करने का मोजिब है। और ये बिजली हरकी तवानाई (Mechanical Energy) में मुन्तक़िल होती है तो चीज़ों की हैयत बदलने लगती है और मुर्दा जिस्म हरकत करने लगते हैं। इसकी सादा सी मिसाल प्लास्टिक की गुड़िया है, जिसको बैटरी से चार्ज किया जाए तो वो मुतहर्रिक हो जाती है और मुख़्तलिफ रिकार्ड शुदा आवाज़ें भी निकालती है। ऐसा खिलौना उस वक़्त तक मुतहर्रिक रहता है जब तक उसे बैटरी सेल से चार्ज मिलता रहता है और यूं माद्दी कायनात में बैटरी सेल का निज़ाम मुर्दा अजसाम को ज़िन्दगी और हरकत देता है।

इसी तरह रूहानी दुनिया में भी जब औलियाए किराम की रूहानियत अपने तकमीली प्रोसेस से गुज़रती है तो जिस मुर्दा दिल पर उन की नज़र पड़ती है वो ज़िन्दा हो जाता है। वो मुर्दा लोग जो सोहबते औलिया से फैज़याब होकर ज़िन्दा हो जाते हैं, उनके दिल और रूहें हयाते नौ से मुस्तफीज़ हो जाती हैं। इसकी तसदीक़ क़ुरआने मजीद में बयान कर्दा हज़रत मूसा عليه السلام और हज़रत ख़िज़्र عليه السلام की मुलाक़ात के हवाले से होती है। जब एक मक़ाम “मजमउल बहरैन” पर .... जो हज़रत ख़िज़्र عليه السلام की क़यामगाह थी.....हज़रत मूसा عليه السلام के नाश्तादान में से मुर्दा मछली ज़िन्दा होकर पानी में कूद जाती है। ये वाक़िआ इस अम्र का मज़हर है कि वो मक़ाम जो हज़रत ख़िज़्र عليه السلام का मसकन था, उसकी आबो हवा में ये तासीर थी कि मुर्दा अजसाम को उस से हयाते नौ मिलती थी। क़ुरआने मजीद में इस वाक़िआ का ज़िक्र यूं आया है :

فَلَمَّا بَلَغَا مَجْمَعَ بَيْنِهِمَا نَسِيَا حُوْتَهُمَا فَاتَّخَذَ سَبِيْلَهُ فِي الْبَحْرِ سَرَبًا ○

(الكهف، ١٨:٦١)

तर्जमा : सो जब वो दोनों दो दरियाओं के संगम की जगह पहुँचे तो वो दोनों अपनी मछली (वहीं) भूल गए पस वो (तली हुई मछली ज़िन्दा होकर) दरिया में सुरंग की तरह रास्ता बनाते हुए निकल गई।

यूं औलिया अल्लाह का वजूदे मसऊद हयात बख़्शी का मज़हर होता है और वो मुर्दों में ज़िन्दगियां बांटने पर मामूर होते हैं। जैसा कि ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी رحمة الله عليه ने हज़रत दाता गंज बख़्श رحمة الله عليه के लिये फरमाया :

गंज बख़्श फैज़े आलम मज़हरे नूरे ख़ुदा।
नाक़िसां रा पीरे कामिल कामिलां रा रहनुमा।।

बिजली का निज़ामे तरसील और औलिया अल्लाह के सलासिल

औलिया अल्लाह के सलासिल दुनिया भर में मौजूद बिजली के निज़ामे तरसील ही की मिस्ल होते हैं। अब ये अपने अपने ज़र्फ की बात है कि कोई किस हद तक फैज़ ले सकता है। अगर कोई ये कहे कि मैं बिजली डायरेक्ट तरबीला डेम से लूंगा तो क्या ऐसा मुमकिन है! तरबीला डेम से कनेक्शन किसे मिल सकता है! दुनिया में बिजली की तरसील का एक निज़ाम है, उसके लिये अपने सलासिल हैं जिन की पाबन्दी ज़रूरी है। एक तय शुदा निज़ाम के मुताबिक़ बिजली तरबीला डेम से पावर हाउस तक, पावर हाउस से पावर स्टेशन और ट्रांसफार्मर तक और वहां से मुक़र्ररा अन्दाज़ के मुताबिक़ घर में आती है। ट्रांसफार्मर से कनेक्शन लेने के बाद हम घरों में स्टेबलाइज़र (Stabliser) और फ्यूज़ (Fuse) भी लगाते हैं ताकि हमारे घरेलू हस्सास बर्क़ी आलात कहीं जल न जाएं। ऐसा इसलिए करते हैं कि हमारे घरों का बर्क़ी सिस्टम इतना मज़बूत और मुस्तहकम नहीं होता कि ज़्यादा वॉल्टेज का मुतहम्मिल हो सके। इसी निज़ाम को सिलसिला कहते हैं।

इसी माद्दी आ़लम की तरह आ़लमे रूहानियत में भी अल्लाह तआ़ला ने फर्श से अ़र्श तक इसी ज़मीन और आसमानी कायनात में एक वाहिद रूहानी डेम बनाया है, जिस से रहमत का फैज़ सारी कायनात में मुख़्तलिफ सलासिल के निज़ाम के ज़रिये मुन्तकि़ल होता है। रहमत व रूहानियत का वो डेम आक़ाए नामदार ﷺ की ज़ाते गिरामी है और उस फैज़ाने रिसालत को तक़सीम करने के लिये औलिया अल्लाह के वसीअ़ व अ़रीज़ सलासिल हैं, जिन्हें Power Distribution Systems यानी रूहानी बिजली की तरसील व तक़सीम के निज़ाम कहते हैं। यही औलियाए किराम मख़लूके़ ख़ुदावन्दी में बक़द्रे ज़र्फ फैज़ तक़सीम करने में मसरूफ रहते हैं और ये सिलसिला ता क़यामे क़यामत यूंही जारी व सारी रहेगा।

औलियाए किराम ने चूंकि सख़्त मेहनत, रियाज़त और मुजाहिदे से निस्बते मुहम्मदी को मज़बूत से मज़बूत तर बना लिया है इसलिए वो बराहे रास्त वहीं से फैज़ हासिल करते हैं, जबकि हर शख़्स का ज़र्फ इस क़ाबिल नहीं होता कि वो डायरेक्ट उस डेम से फैज़ हासिल कर सके। आ़म अफरादे दुनिया के लिये وَ اصْبِرْ نَفْسَکَ مَعَ الَّذِيْنَ का दर्स है कि वो उन अल्लाह वालों की संगत इख़्तियार कर लें और अपने आपको उन से पेवस्ता और वाबस्ता रखें तो उन्हें भी फैज़ नसीब हो जाएगा। सलासिले तरीक़त का ये निज़ाम मिन जानिबे अल्लाह क़ायम है। ये एक सिलसिलाए नूर है, जो तमाम आ़लमे इंसानियत को रब्बुल ईज़ाल की रहमत से सैराब कर रहा है। इससे इंकार, अ़क़्ल का इंकार, शऊर का इंकार और रब्बे कायनात के निज़ामे रबूबियत का इंकार है।

चाँद की तसख़ीर और अपोलो मिशन

रूहानी तअ़ल्लुक़ को यूं भी समझा जा सकता है कि ख़लाई तहक़ीक़ात के अमरीकी इदारे National Aeronautic Space Agency (NASA) की तरफ से तसख़ीरे माहताब के लिये शुरू किये गये दस साला अपोलो मिशन का प्रोब Apolo-10 चाँद की तसख़ीर की लिये महवे सफर था तो अमरीकी रियासत फ्लोरिडा में क़ायम ज़मीनी मर्कज़ Kennedy Space Center (KSC) में मौजूद साइंसदान उसे बराहे रास्त हिदायात दे रहे थे। ऐसे में दौराने सफर हादसाती तौर पर उस का राब्ता अपने ज़मीनी कन्ट्रॉल रूम से मुन्क़तअ़ हो गया, जिस के नतीजे में न सिर्फ वो अपनी मंज़िले मक़सूद तक न पहुँच सका, बल्कि आज तक उस का सुराग़ भी न मिल सका। इस अ़जीम हादसे के कुछ ही अर्से बाद जुलाई 1969 ई. में अपोलो मिशन का अगला प्रोब Apolo-11 चाँद की तरफ भेजा गया। दौराने सफर चूंकि उस का राब्ता अपने ज़मीनी मर्कज़ से बहाल रहा इसलिए वो चाँद तक पहुँचने और दो दिन बाद बहिफाज़त लौटने में कामयाब रहा। सो जिस तरह वो अपोलो मुहिम जिस का राब्ता ज़मीन पर वाके़अ़ अपने ख़लाई तहक़ीक़ाती मर्कज़ से खो गया था, वो नाकाम और तबाह व बर्बाद हो गई, और दूसरी तरफ वो मुहिम जिस का राब्ता बहाल रहा, कामयाबी से हमकिनार हुई ..... बिल्कुल इसी तरह ये बात ज़हन नशीं रहनी चाहिये कि इस माद्दी दुनिया की तरह रब्बे जुल जलाल ने रुश्दो हिदायत के एक तय शुदा निज़ाम के ज़रिये कामयाबी और निजात की मंज़िल तक पहुँचने के लिये रूहानी मर्कज़े निजात हुज़ूर नबीए अकरम ﷺ की ज़ात का बनाया है। सो हम में से जिस का राब्ता उस मर्कज़े मुस्तफवी से क़ायम रहा वो मंज़िले मक़सूद तक पहुँच जाएगा और जो अपना राब्ता बहाल न रख सका वो

नीस्तो नाबूद होकर रह जाएगा और अपोलो 10 जैसी तबाही और हलाकत उस का मुक़द्दर होगी।

क़ल्बी स्क्रीन और रूहानी टी वी चैनल

आज के इस दौरे फितन में हमारे दिलों पर ग़फलत के दबीज़ पर्दे पड़े हुए हैं और उन पर फैज़ाने उलूहियत और फैज़ाने रिसालत का नुज़ूल बन्द हो गया है। जिस की वजह से हम मुतलक़न वजूदे फैज़ ही का इन्कार करने पर तुल जाते हैं। बात दर असल ये है कि अल्लाह तआला ने हमारे दिल को एक टी वी स्क्रीन की मिस्ल बनाया है, जिस पर रूहानी चैनल से नशरियात का आना बन्द हो गया है और हम ग़फलत में कहते फिरते हैं कि चैनल ने काम करना बन्द कर दिया है। नहीं! चैनल पर नशरियात तो उसी तरह जारी हैं जबकि हमारे टी वी सेट में कोई ख़राबी आ गई है और जब तक इस ख़राबी को दूर नहीं किया जाएगा, नशरियात सुनाई और दिखाई नहीं देंगी। जिस तरह टी वी के लिये स्टेशन से राब्ता बहाल हो तो स्क्रीन पर तसवीर भी दिखाई देती है और आवाज़ भी सुनाई देती है और अगर ये राब्ता किसी वजह से टूट जाए तो फिर आवाज सुनाई देती है और न तसवीर दिखाई देती है। इसी तरह सरवरे कायनात ﷺ की रहमतुल लिलआलमीनी और फैज़ाने नबुव्वत का सिलसिला बिला टूटे जारी व सारी है, ये हमारे क़ल्ब की सूई है, जो राब्ता बहाल न होने के बाइस उस स्टेशन को नहीं पा रही जहां से रूहानी नशरियात दिन रात नश्र हो रही हैं। आज भी ये राब्ता बहाल हो जाए तो ये फैज़ान हम तक बिला रोक पहुँच सकता है।

औलियाए किराम का तअल्लुक़ अपने आक़ा व मौला ख़त्मी मर्तबत ﷺ से कभी नहीं टूटता और उनकी क़ल्बी स्क्रीन हमा वक़्त गुम्बदे ख़िज़रा की

नशरियात से बहरायाब रहती है। हज़रत अबुल अब्बास मरसी رحمة الله عليه एक बहुत बड़े वलीयुल्लाह गुज़रे हैं, वो फरमाते हैं :

لو حجب عنى رسول الله صلى الله عليه وسلم طرفة عين ما عددتُ نفسى من المُسلمين۔

तर्जमा : अगर एक लम्हे के लिये चेहरए मुस्तफा ﷺ मेरे सामने न रहे तो मैं उस लम्हे ख़ुद को मुसलमान नहीं समझता। (रूहुल मआनी, 22:36)

अल्लाह के बन्दों की सूई गुम्बदे ख़िज़रा के चैनल (Channel) पर लगी रहती है और उन का राब्ता किसी लम्हा भी अपने आक़ा व मौला की बारगाह से नहीं टूटता, इसलिए वो तकते भी रहते हैं और सुनते भी रहते हैं।

असहाबे कहफ पर ख़ास रहमते इलाही

क़ुरआन फहमी के बाब में रब्त बैनुल आयात बड़ी अहमियत का हामिल है। इस हवाले से जब हम सूरए कहफ का मुतालआ करते हुए आयाते क़ुरआनी का रब्त देखते हैं तो وَ اصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ से इस सूरए मुबारका में बयान कर्दा वाक़ियाए असहाबे कहफ अपनी पूरी मअनवियत के साथ हमारे सामने आ जाता है। ये पहली उम्मत के वो औलिया अल्लाह थे जो अल्लाह के दीन और उसकी रज़ा के लिये दुश्मनाने दीन के ज़ुल्मो सितम से बचने के लिये अपने घरों से हिजरत कर गए और एक ग़ार में पनाह हासिल कर ली और वहां बहुज़ूरे ख़ुदावन्दी दुआ गौ हुए :

رَبَّنَا اٰتِنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً وَّ هَيِّئْ لَنَا مِنْ اَمْرِنَا رَشَدًا۝

(الكهف،١٨:١٠)

तर्जमा : ऐ हमारे रब! हमें अपनी बारगाह से ख़ुसूसी रहमत अ़ता फरमा और हमारे काम में राहयाबी (के असबाब) मुहैया फरमा।

उन की दुआ को शर्फे क़बूलियत बख़्शते बारी तआ़ला ने उन्हें इस मुज़दए जांफज़ा से नवाज़ा कि तुम्हारा रब ज़रूर अपनी रहमत तुम तक फैला देगा। अब सवाल पैदा होता है कि वो ख़ास रहमत जिस का ज़िक्र क़ुरआने करीम में मज़कूर है, क्या थी? यहाँ क़ुरआने मजीद के सियाक़ो सबाक़ का गहराई से मुतालआ़ किया जाए तो असहाबे कहफ के हवाले से ये बात सामने आती है कि वो ग़ार में 309 साल तक आराम फरमा रहे। खाने, पीने से बिल्कुल बेनियाज़ क़ब्र की सी हालत में 309 साल तक उन जिस्मों को गर्दिशे लैलो नहार से पैदा होने वाले असरात से महफ़ूज़ रखा गया। सूरज रहमते ख़ुदावन्दी के ख़ुसूसी मज़हर के तौर पर उन की ख़ातिर अपना रास्ता बदलता रहा ताकि उनके जिस्म मौसमी बदलाव से महफ़ूज़ व मामून और सही सालिम रहें। 309 क़मरी साल 300 शम्सी सालों के बराबर होते हैं। इस का मतलब ये हुवा कि कुरहए अरज़ी के 300 मौसम उन पर गुज़र गए मगर उनके जिस्म तरोताज़ा रहे और तीन सदियों पर मुहीत ज़माना उन पर इन्तेहाई तेज़ रफ्तारी के साथ गुज़र गया। क़ुरआने मजीद फरमाता है :

وَ تَرَى الشَّمْسَ إِذَا طَلَعَتْ تَّزٰوَرُ عَنْ كَهْفِهِمْ ذَاتَ الْيَمِيْنِ وَ إِذَا غَرَبَتْ تَّقْرِضُهُمْ ذَاتَ الشِّمَالِ وَ هُمْ فِىْ فَجْوَةٍ مِنْهُ (الكهف،١٨:١٧)

तर्जमा : और आप देखते हैं जब सूरज तुलूअ़ होता है तो उनके ग़ार से दाएं जानिब हट जाता है और जब गुरूब होने लगता है तो उन से बाएं जानिब कतरा जाता है और वो उस कुशादा मैदान में (लेटे) हुए हैं।

अल्लाह की ख़ास निशानी यही है कि उसने अपने वलियों को लिये 309 क़मरी साल तक सूरज के तुलूअ़ व गुरूब के उसूल तक बदल दिये और ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ की रू से एक मुअ़य्यन निज़ामे फलकियात का सूरज के गिर्द ज़मीन की सौ मुकम्मल गर्दिशों तक के तवील अर्से के लिये सिर्फ इसलिए तब्दील कर दिया गया और फितरी ज़ाब्तों को बदलकर रख दिया गया ताकि उन वलियों को कोई गजन्द न पहुंचे।

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने इस पूरे वाक़िये को बयान करके इसी के तनाज़ुर में इरशाद फरमाया : ''अगर लोग मेरा क़ुर्ब हासिल करना चाहते हैं तो मेरे इन मुक़र्रब बन्दों के हल्क़ा बगौश हो जाएं और وَ اصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِيْنَ को हिर्ज़े जां बना लें'', फिर आगे चल कर इरशादे रब्बानी हुआ :

مَنْ يَهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدُ وَ مَنْ يُضْلِلْ فَلَنْ تَجِدَ لَهُ وَلِيًّا مُرْشِدًا۔ (الكهف،١٨:١٧)

तर्जमा : अल्लाह जिसे हिदायत देता है वही राहे हिदायत पर है और जिस को वो गुमराह कर दे तो आप किसी को उसका दोस्त नहीं पाएंगे।

ख़ुदाए रहमान व रहीम ने अपनी ख़ुसूसी रहमत से असहाबे कहफ को थपकी देकर पुर कैफ नींद सुला दिया और उन पर अजीब सरशारी की कैफियत तारी कर दी। फिर उन्हें एक ऐसे मुशाहिदए हक़ में मगन कर दिया

कि सदियां साअ़तों में तब्दील होती महसूस हुईं। जैसा कि क़यामत का दिन जो पचास हज़ार साल का होगा, वो अल्लाह के नेक बन्दों पर अस्र की चार रकअ़तों की अदायगी जितने वक़्त में गुज़र जाएगा। जबकि दीगर लोगों पर वो लम्बा दिन नाक़ाबिले बयान कुरबो अज़िय्यत का हामिल होगा। पस साबित हुआ कि मुशाहिदए हक़ के इस्तिग़राक़ में वक़्त सिमट जाता है और सदियां लम्हों में बदल जाती हैं।

महीने वुस्ल के घड़ियों की सूरत में उड़े जाते हैं।
मगर घड़ियां जुदाई की गुज़रती है महीनों में ।।

रोज़े क़यामत अल्लाह तआ़ला मलाइका को हुक्म देगा कि उन तालिबाने मौला को ..... जिन के पहलू फक़त मेरी रज़ा की ख़ातिर नर्मो गुदाज़ बिस्तरों से दूर रहते थे और उन की रातें मुसल्ले पर रुकूअ़ व सुजूद में बसर होती थीं .. ... मेरे दीदार से शरफयाब किया जाए और उन पर से सब पर्दे उठा दिये जाएं। पस वो क़यामत के दिन नूर के टीलों पर रौनक़ अफरोज़ होंगे और सदियों पर मुहीत वो तवील वक़्त उन पर अ़स्र के हन्गाम की तरह गुज़र जाएगा जब कि दूसरों के लिये ये अ़र्साए क़यामत पचास हज़ार साल के बराबर होगा।

औलिया अल्लाह की बाद अज़ वफात ज़िन्दगी

असहाबे कहफ के हवाले से कु़रआने मजीद कहता है कि जब उन पर सदियों का अ़र्सा चन्द साअ़तों में गुज़र गया और बेदार होने पर उन्होंने एक दूसरे से पूछा कि कितना अ़र्सा गुज़रा होगा? तो उन में से एक ने कहा :

يَوْمًا أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ

"एक दिन या दिन का कुछ हिस्सा"।

क़ुरआने करीम की इस बात से कैसे इन्कार हो सकता है कि उन पर सदियां गुज़र गई थीं, मगर उनके कपड़े बोसीदा (पुराने) न हुए थे और जिस्मों पर कोई कमज़ोरी और नक़ाहत के आसार न थे बल्कि यक गूना ताज़गी और बशाशत थी जैसे वो चन्द घंटे नींद करके ताज़ा दम उठे हों।

फिर उन्होंने अपने में से एक साथी को कुछ सिक्के देकर कहा कि जाओ इस रक़म से खाने की चीज़ें ख़रीद लाओ। जब वो सौदा सलफ करने बाज़ार गया तो दुकानदार उन सिक्कों को हैरत और बेयक़ीनी से तकने लगा कि ये शख़्स सदियों पुराने सिक्के कहाँ से लेकर आ गया! वो उन्हें क़बूल करने से इन्कारी था कि इतनी सदियों पुराने सिक्के अब नहीं चलते। वो (असहाबे कहफ का फर्द) कहने लगा :"भई ये सिक्के अभी हम कल ही तो अपने साथ लेकर गए थे"। दुकानदार ने कहा : क्या बात करते हो ये सदियों पुराने सिक्के जाने तुम कहाँ से ले के आ गए हो। फिर जब असहाबे कहफ के उस फर्द ने अपने गर्दो पेश तवज्जोह की और ग़ौर से देखा तो उस माहौल की हर चीज़ का बदला हुआ पाया।

ये अहलुल्लाह वो अहले मुशाहिदा होते हैं कि जिन पर ग़ारों में हज़ारों बरस भी बीत जाएं, मगर उन की जिस्मानी हालत में कोई तब्दीली वाक़ेअ़ न होगी। इसी तरह वो अहले मुशाहिदा जो क़ब्र में बरज़ख़ी ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं, हज़ारों साल उन पर इस तरह बीत जाएंगे जैसे दो लम्हे हों। ये कोई मनगढ़त क़िस्सा नहीं, क़ुरआने हकीम का बयान कर्दा वाक़िया है, जिस की सदाक़त को झुठलाया नहीं जा सकता। औलियाए किराम का ये आ़लम है कि विसाल के बाद भी मुशाहिदए हक़ की ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं। फिर उस पैग़म्बरे हक़ ﷺ की ज़िक्र ही क्या जो आए ही मुर्दा इन्सानों में ज़िन्दगियां बांटने के लिये थे और आज तक ज़िन्दगियां बांट रहे हैं।

औलिया अल्लाह का ख़िदमत गुज़ार कुत्ता भी सलामत रहा

असहाबे कहफ के साथ उन का एक ख़िदमत गुज़ार कुत्ता भी था। 309 साल तक वो कुत्ता भी ग़ार के दहाने पर पांव फैलाए हुए उन की हिफाज़त पर मामूर रहा। उन की निस्बत से कु़रआने मजीद में उस कुत्ते का ज़िक्र भी आया है :

وَ كَلْبُهُمْ بَاسِطٌ ذِرَاعَيْهِ بِالْوَصِيْدِ۔

(الکہف،۱۸:۱۸)

तर्जमा : और उन का कुत्ता (उनकी) चौखट पर अपने दोनों बाज़ू फैलाए (बैठा) है।

कुत्ते को ये मक़ाम उन ग़ार नशीं औलियाए हक़ की बदौलत मिला। मुफस्सिरीन लिखते हैं कि जब वक़्फे वक़्फे से असहाबे कहफ दाएं बाएं करवट लेते तो वो कुत्ता भी करवट लेता था। ये उसी सोहबत नशीनी का असर था जिस का ज़िक्र وَ اصْبِرْ نَفْسَکَ مَعَ الَّذِیْنَ में हुवा। बाज़ रिवायात में है कि असहाबे कहफ ने इस ख़दशे के पेशे नज़र कि कुत्ते के भौंकने से कहीं ज़ालिम बादशाह के कारिन्दे उन तक न आन पहुँचे, बहुत कोशिश की कि कुत्ता ग़ार से चला जाए, वो उस को धुतकारते लेकिन वो उन की चौखट से जम गया और तीन सदियों तक फैज़े रहमत से बहरयाब होता रहा।

ज़ाते मुस्तफा ﷺ ...... मन्बए फुयूज़ाते इलाहिया

आक़ाए दो जहां ﷺ अपनी रहमतुल लिलआलमीनी की बिना पर इस कायनाते आबो गुल के मिक़्नातीसे आज़म हैं, जिन्हें बारगाहे उलूहियत से "इलेक्ट्रीक चार्ज मैथड" और "स्ट्रॉक मैथड" दोनों ज़राए से फैज़ मिला है।

दरे शबिस्ताने हिरा ख़लवत गज़ीद।
क़ौम व आईन व हुकूमत आफरीद।।

ग़ारे हिरा की ख़लवतों ने ताजदारे कायनात ﷺ का पूरी नस्ले इन्सानी का मुहसिन व हादिए आज़म बना दिया। जिनके दम क़दम से दुनियाए शरक़ व ग़रब (पूरब से पश्चिम) एक क़ौम, एक क़ुरआन और एक हुकूमते इलाहिया के नज़्म में पिरो दी गई। उस फैज़ाने उलूहियत का ज़िक्र करते हुए आप ﷺ ने फरमाते हैं कि एक रात मुझे अल्लाह तआ़ला ने अपनी शान के मुताबिक़ दीदार अ़ता किया और अपना दस्ते कुदरत मेरे दोनों शानों के दरमियान रखा। उस की बदौलत मैंने अपने सीने में ठंडक महसूस की, फिर उस के बाद मेरे सामने से सारे पर्दे उठा दिये गए और आसमान व ज़मीन की हर चीज़ मुझ पर रोशन हो गई। फैज़े उलूहियत का ये आ़लम तो ज़मीन पर था, उस फैज़ का आ़लम क्या होगा जो "قَابَ قَوْسَيْنِ" के मक़ाम पर आप ﷺ के दरजात की बुलन्दी का बाइस बना और फिर आप को "أَوْ أَدْنٰى" का क़ुर्बे उलूहियत हासिल हुआ। जिस के बाद ज़मानो मकां और ला मकां के तमाम फासले मिट गये और मुहिब्ब व महबूब में दो कमानों से भी कम फासला रह गया। قَابَ قَوْسَيْنِ أَوْ أَدْنٰى के अल्फाज़ से मख़लूक़ का ये बतलाना मक़सूद था कि देखो अपना अ़क़ीदा दुरुस्त रखना, अल्लाह तआ़ला की ख़ालिक़ियत और मअ़बूदियत अपनी जगह बर हक़ है और मुहम्मद ﷺ इतने क़रीब होकर भी अ़ब्दियत के मक़ाम पर फाइज़ हैं। ये फर्क़ रवा रखना लाज़िम है।

फैज़े उलूहियत की सारी हदें और इन्तिहाएं आप ﷺ पर तमाम हुईं। जब तमाम फैज़ आप ﷺ का अ़ता कर दिये तो आप ﷺ ने फरमाया :

مَنْ رَأَنِیْ فَقَدْ رَاءَ الْحَق۔

(صحیح البخاری،۲:۱۰۳۶) (مسند احمد بن حنبل،۳:۵۵)

तर्जमा : जिस ने मुझे देख लिया तहक़ीक़ उसने अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त को देख लिया।

सय्यदना मूसा عليه السلام ने बारगाहे हक़ में दीदार की इल्तिजा की थी, जिस का जवाब उन्हें जब्ले तूर पर तजल्लियाते इलाहिया को बर्दाश्त न कर पाने की सूरत में मिला हज़रत मूसा عليه السلام ने दीदारे इलाही की इल्तिजा कई बार की थी मगर उन की ये दुआ उस वक़्त तक मोअख़्ख़र कर दी गई जब तक कि उम्मते मुस्लिमा को शबे मेअ़राज पचास नमाज़ें दी गईं और छठे आसमान पर हज़रत मूसा عليه السلام आप ﷺ को बार-बार बारगाहे उलूहियत में पलट जाने के लिये अ़र्ज़ करते रहे, यहां तक कि पाँच नमाज़ रह गईं। आप ﷺ महबूबे हक़ीक़ी के जलवों का मज़हरे अतम होकर लौटते तो हज़रत मूसा عليه السلام आप ﷺ के दीदारे फरहत आसार से शादकाम होते। ये आ़लमे लाहूती का फैज़ था, जबकि आ़लमे नासूती के फैज़ का ये आ़लम था कि ज़मीनो आसमान के सब ख़ज़ानों की कुंजियां आप ﷺ को थमा दी गईं और आप ﷺ तमाम फुयूज़ाते इलाहिया के क़ासिम बन गए। जिस तरह आप ﷺ फैज़ाने उलूहियत के क़ासिम हैं उसी तरह औलिया अल्लाह फैज़ाने रिसालत के क़ासिम हैं। जैसा कि क़ुरआने मजीद में इरशाद होता है :

أَ وَ مَنْ كَانَ مَيْتًا فَأَحْيَيْنٰهُ وَ جَعَلْنَا لَهٗ نُوْرًا يَّمْشِيْ بِهٖ فِي النَّاسِ۔ (الانعام،٦:١٢٢)

तर्जमा : भला वो शख़्स जो मुर्दा (यानी ईमान से महरूम) था फिर हम ने उसे (हिदायत की बदौलत) ज़िन्दा किया और हमने उसके लिये (ईमान व मअ़रफत का) नूर पैदा फरमा दिया (अब) वो उस के ज़रिये (बक़िया) लोगों में (भी रोशनी फैलाने के लिये चलता है)।

मुराद ये कि कुछ वो लोग हैं जिन के दिल मुर्दा थे, हम ने उन मुर्दा दिलों को ज़िन्दा करके नूरे नबुव्वत से सरफराज़ फरमाया। फिर जैसे उन्हें नूरे नबुव्वत से ज़िन्दगी मिली वो उस नूर को लोगों में भी बांटते हैं। अब ये उसी "يَمْشِيْ بِهٖ فِى النَّاسِ" का करिश्मा था कि किसी को ग़ौसे आज़म رحمة الله عليه की सूरत में बग़दाद में ये ज़िम्मेदारी दी, किसी को दाता गंज बख़्श हिजवैरी رحمة الله عليه बनाकर लाहौर में किसी को ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رحمة الله عليه बनाकर अजमेर में किसी को ग़ौस बहाउद्दीन ज़करिया رحمة الله عليه बनाकर मुल्तान में नूर बांटने पर लगा दिया और कोई इस नूर को सरहिन्द में तक़सीम करने पर मामूर हुआ। वो दिल जो मुर्दा थे सब इस नूर ने ज़िन्दा कर दिये अब मौत की क्या मजाल कि उन्हें मार सके। मौत तो सिर्फ एक ज़ायक़ा है और बक़ौले इक़बाल :

मौत तजदीदे मज़ाक़े ज़िन्दगी का नाम है।
ख़्वाब के पर्दे में बेदारी का इक पैग़ाम है।।

✶ ✶ ✶ ✶ ✶

अशारिया

किताबियात

नं.	किताब	मुसन्निफ/मुतवफ्फी नाशिर/सन्ने इशाअ़त
1	**कुरआन मजीद**	मुनज़्ज़ल मिनल्लाह
2	**सहीहुल बुख़ारी**	इमाम मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी ؒ, 256 हि. क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची, 1381 हि.
3	**सहीह मुस्लिम**	इमाम मुस्लिम बिन अल हज्जाज अल क़शीरी ؒ, 261 हि. क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची, 1375 हि.
4	**मुसनद अहमद बिन हम्बल**	इमाम अहमद बिन हम्बल ؒ, 241 हि. दारुल फिक्र बैरूत, 1398 हि.
5	**अल मुअ़जमुल कबीर**	हाफिज़ सुलैमान बिन अहमद तिबरानी ؒ, 360 हि. मतबअ़तुज्ज़हरा अल हदीसिया इराक़, 1988 ई.
6	**शरहुस्सुन्नह**	इमाम हुसैन बिन मसऊ़द अल बग़वी ؒ, 516 हि. अल मकतबतुल इस्लामी बैरूत, 1983 ई.
7	**मिश्कातुल मसाबीह**	इमाम मुहम्मद ख़तीब अत्तबरेज़ी ؒ, 742 हि. क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची, 1368 हि.
8	**रूहुल मआ़नी**	इमाम शहाबुद्दीन आलूसी ؒ, 1270 हि. दारे इहयाउत्तुरास अल अरबी बैरूत